

लाल-किताब संहिता

Name - Sample

Date - 10/08/1941

Time - 02:15:00

POB - New delhi (Delhi) India

Longitude - 077:12:00 E

Latitude - 028:36:00 N



Mindsutra Software Technologies

A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059

Phone: 011-49043166, 91 9818193410



श्री गणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।	तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदारणवसम्भवम् ।	नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।	कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।	सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसनिभम् ।	बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।	सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।	छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।	सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।	रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरूप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूँ। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूँ। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूँ। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूँ। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूँ। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूँ। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूँ। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूँ। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री-पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरुष
जन्म दिनांक	10:08:1941
जन्म समय	02:15:00
जन्म दिन	रविवार
जन्म स्थान	new delhi
राज्य	Delhi
देश	India
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:11
स्थानीय समय	001:53:48 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	-00:00
सांपातिक काल	023:05:35 hrs
इष्ट काल	51: 03: 50 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	1 9 9 8
शक संवत	1 8 6 3
संवत्सर	वृष
ऋतु	वर्षा
मास	भाद्र
पक्ष	कृष्ण
वार	
तिथि	तृतीया
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद (2)
योग	अतिगण्ड
करन	विष्टी

अवकहड़ा चक्र

पाया	रजत
वर्ण	शुद्र
वश्य	जलचर
योनि	शेर (पु०)
गण	मनुष्य
नाड़ी	आदि
रज्जु	नाभि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	बृहस्पति
विहग	मयूर
नाड़ी पद	मध्य
वेध	उत्तरफाल्ग
आद्याक्षर	सा
दशा बैलेंस	बृहस्पति-9 . 0 व . 1 . 0 म . 1 1 द .
वर्तमान दशा	चन्द्र-शनि-केतु
भयात	26: 58: 05 Ghati
भभोग	63: 13: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	कर्क
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	सिंह
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:02:29
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	05:50:28AM
सूर्यास्त	07:02:42PM
जन्मदिन का ग्रह	सूर्य
जन्मसमय का ग्रह	शनि



लग्न
मिथुन



राशि
कुम्भ

नक्षत्र - पद
पूर्वाभाद - 2



लग्नाधिपति
बुध



राशिपति
शनि



नक्षत्रपति
बृहस्पति

घात चक्र

चैत्र अशुभ मास	वृहस्पतिवार अशुभ वार	3 अशुभ प्रहर
धनु अशुभ राशि	कन्या अशुभ लग्न	3, 8, 13 अशुभ तिथि
अरिद्रा अशुभ नक्षत्र	ब्याधात अशुभ योग	किम्सतुघ्न अशुभ करन

शुभ बिन्दु

1 मूलांक	6 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
1, 8 शत्रु अंक	18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार, शनिवार शुभ दिन
बुध, शुक्र, शनि शुभ ग्रह	बृहस्पति अशुभ ग्रह	वृष, सिंह, तुला, धनु मित्र राशि
कन्या, धनु, कुम्भ, मेष मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
नीलम भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूर, फल शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रव्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)



सूर्य

कर्क

23:47:42
अश्लेषा (3)
मित्र राशि



चन्द्रमा

कुम्भ

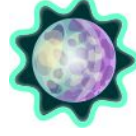
25:44:26
पूर्वाभाद (2)
सम राशि



मंगल

मीन

25:32:30
रेवती (3)
मित्र राशि



बुध (अ.)

कर्क

14:00:17
पुष्य (4)
शत्रु राशि



बृहस्पति

वृष

22:48:58
रोहिणी (4)
शत्रु राशि



शुक्र

सिंह

23:31:29
पूर्वफाल्गु (4)
स्व नक्षत्र



शनि

वृष

04:37:01
कृत्तिका (3)
मित्र राशि



राहु

कन्या

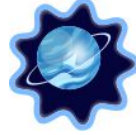
01:26:07
उत्तरफाल्गु (2)
मित्र राशि



केतु

मीन

01:26:07
पूर्वाभाद (4)
सम राशि



हाल

वृष

07:00:34
कृत्तिका (4)
सम राशि



नेपच्यून

कन्या

02:55:44
उत्तरफाल्गु (2)
सम राशि



प्लूटो

कर्क

11:15:04
पुष्य (3)
सम राशि



लग्न

मिथुन

07:01:34
अरिद्रा (1)
.....



10वां कस्प

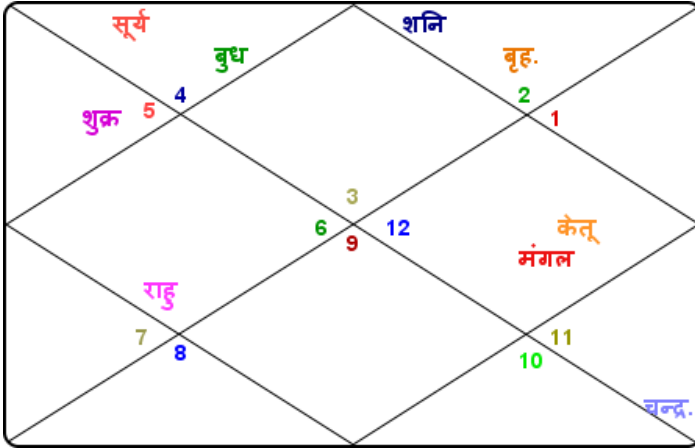
मीन

22:11:00
पूर्वाभाद (1)
.....

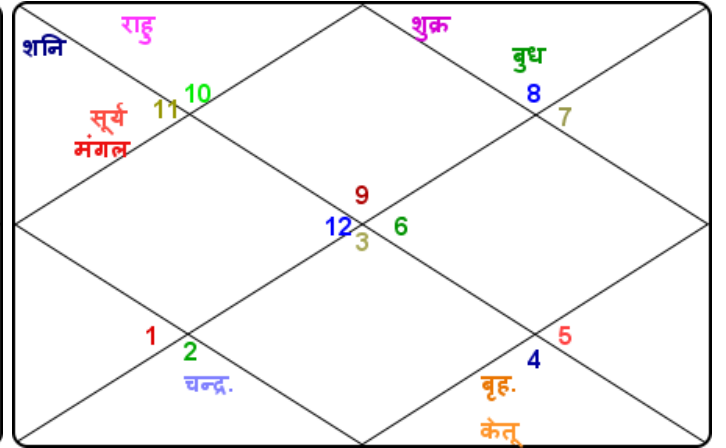
ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC लग्न		II मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (6)	1		
☉ सूर्य		☉ कर्क	23:47:42	अश्लेषा (9)	3	भ्रात्रि	मित्र राशि
☾ चन्द्रमा		♋ कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (25)	2	आत्म	सम राशि
♂ मंगल		♋ मीन	25:32:30	रेवती (27)	3	अमात्य	मित्र राशि
♃ बुध	अ.	☉ कर्क	14:00:17	पुष्य (8)	4	ज्ञाति	शत्रु राशि
♄ बृहस्पति		♋ वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	4	अपत्या	शत्रु राशि
♅ शुक्र		♌ सिंह	23:31:29	पूर्वफाल्गु (11)	4	मात्रि	स्व नक्षत्र
♆ शनि		♋ वृष	04:37:01	कृत्तिका (3)	3	दारा	मित्र राशि
♇ राहु		♎ कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्गु (12)	2		मित्र राशि
♈ केतु		♋ मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (25)	4		सम राशि
♄ हर्षल		♋ वृष	07:00:34	कृत्तिका (3)	4		सम राशि
♃ नेपच्यून		♎ कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्गु (12)	2		सम राशि
♃ प्लूटो		☉ कर्क	11:15:04	पुष्य (8)	3		सम राशि

लग्न कुण्डली



नवांश कुण्डली



लाल किताब में ग्रह



सूर्य

भाव न. 2, कायम, जन्मदिन का, शत्रु के घर में, शुभ भाव में



चन्द्रमा

भाव न. 9, शुभ भाव में



मंगल

भाव न. 10, उच्चस्थ, शुभ भाव में



बुध

भाव न. 2, स्वभाव (शुक्र), किस्मत का, कायम, मित्र के घर में, शुभ भाव में, साथी (शुक्र)



बृहस्पति

भाव न. 12, अपने घर का, पितृ ऋण, शुभ भाव में



शुक्र

भाव न. 3, स्त्री ऋण, मित्र के घर में, शुभ भाव में, साथी (बुध)



शनि

भाव न. 12, बद स्वभाव, जन्मसमय का, जालीमाना ऋण, र्मी, शुभ भाव में



राहु

भाव न. 4, र्मी, अशुभ भाव में

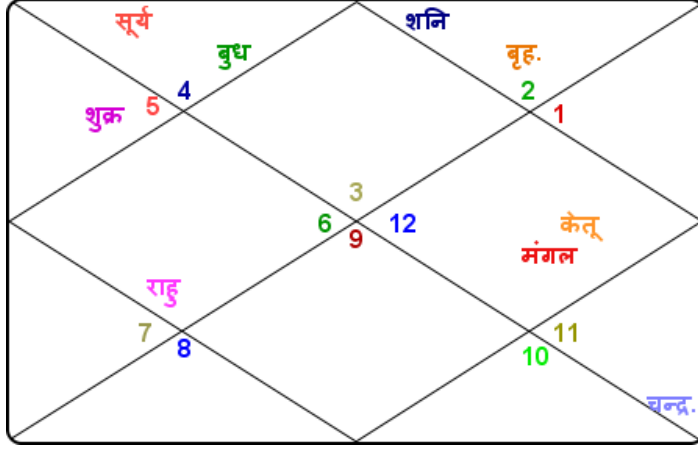


केतु

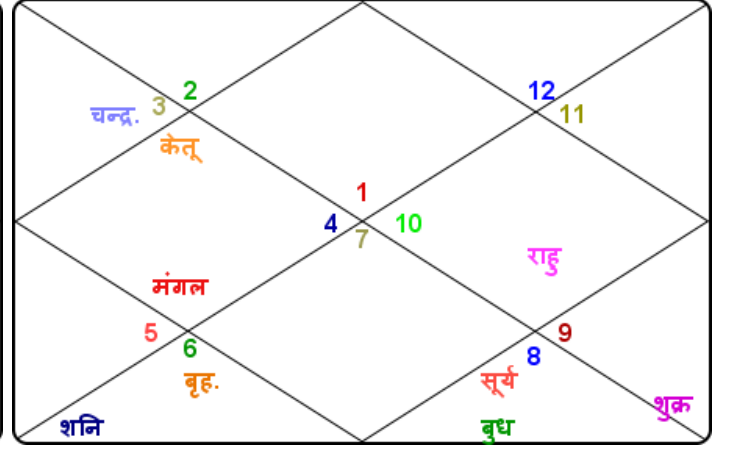
भाव न. 10, राशिफल, शुभ भाव में

ग्रह स्थिति (लाल किताब)

लाल किताब टेवा



लाल किताब चन्द्र कुण्डली



ग्रह योग

सूर्य, बुध	(युति), मंगल (नेक), औलाद जिंदा रखने का मालिक
बुध, शुक्र	(साझी दिवार), सूर्य, स्वास्थ्य/सेहत

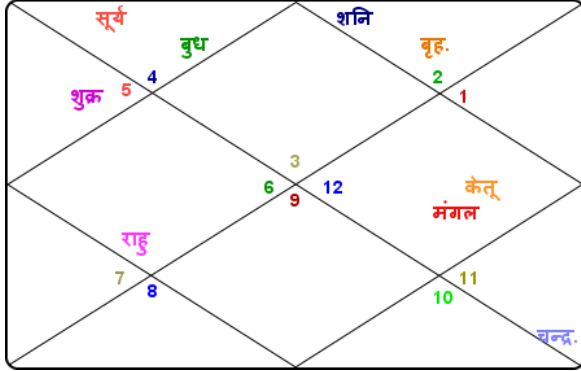
ग्रह दृष्टि (लाल किताब)

ग्रह	मुख्य	मददगार	टकराव	बुनियाद	दुश्मन (धोखा)	साझी दिवार	अचानक चोट
सूर्य			चन्द्रमा	मंगल, केतु		शुक्र	बृहस्पति, शनि, राहु
चन्द्रमा			राहु			मंगल, केतु	
मंगल		सूर्य, बुध					बृहस्पति, शनि
बुध			चन्द्रमा	मंगल, केतु		शुक्र	बृहस्पति, शनि, राहु
बृहस्पति		राहु			चन्द्रमा		सूर्य, मंगल, बुध, केतु
शुक्र	चन्द्रमा(50)		मंगल, केतु		बृहस्पति, शनि	राहु	
शनि		राहु			चन्द्रमा		सूर्य, मंगल, बुध, केतु
राहु	मंगल(100), केतु(100)			बृहस्पति, शनि			सूर्य, बुध
केतु		सूर्य, बुध					बृहस्पति, शनि



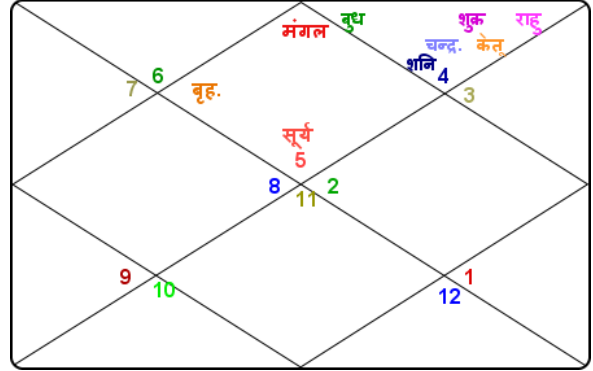
षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)



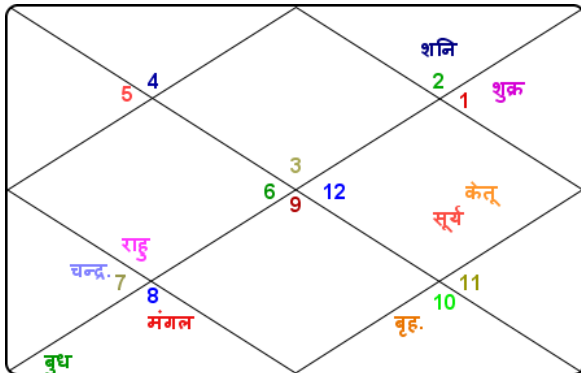
जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)



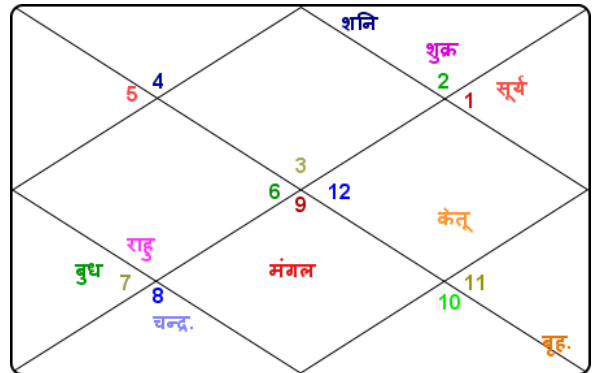
होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुण्डली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)



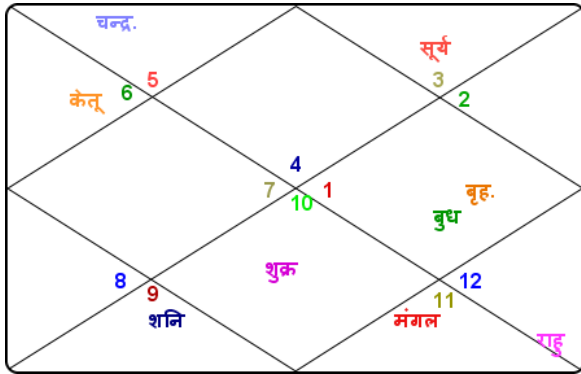
द्रेष्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई--बहनों, चचेरे भाई--बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थाश कुण्डली (डी 4)



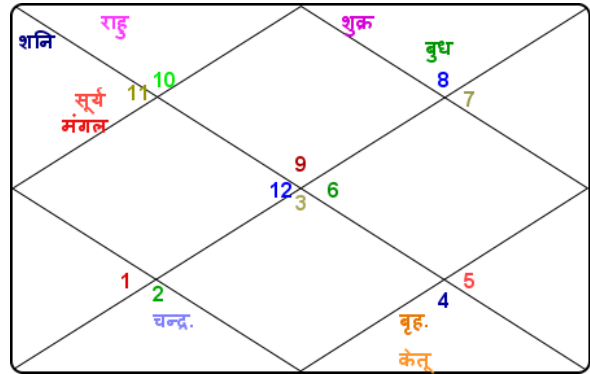
चतुर्थाश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)



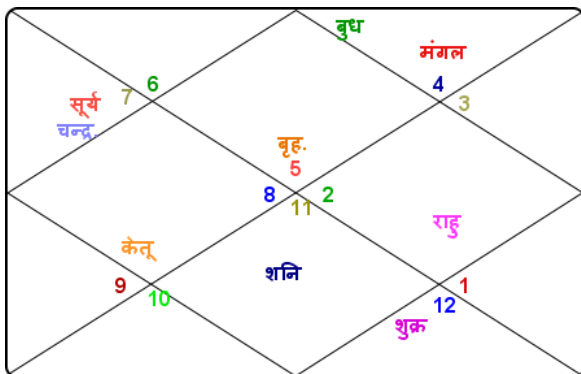
सप्तमांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)



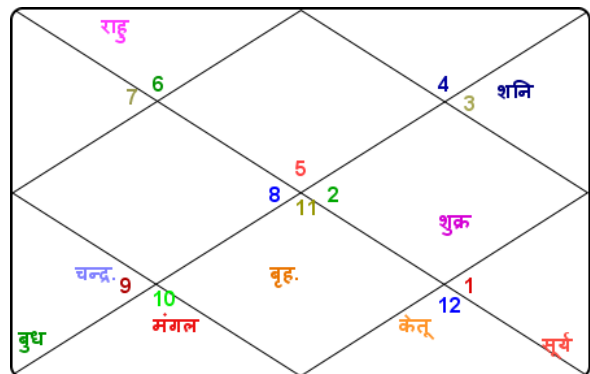
नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)



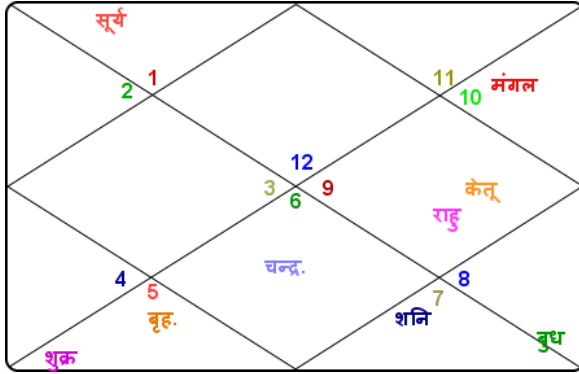
दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समय व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)



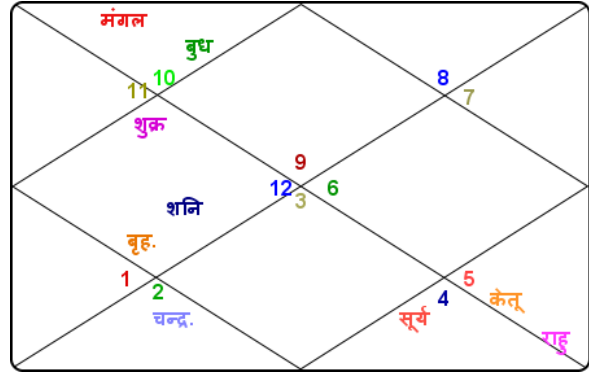
द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता-पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता-पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)



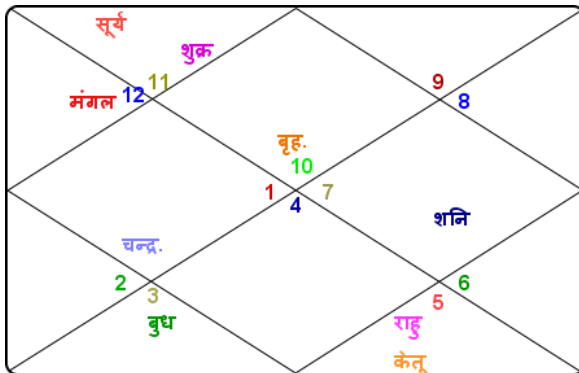
षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के अटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)



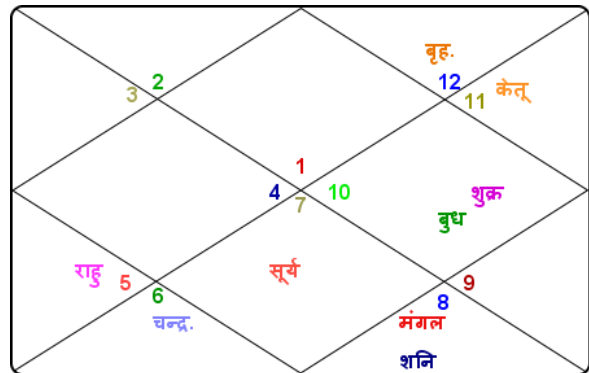
विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतरात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चतुर्विंशांश कुण्डली (डी 24)



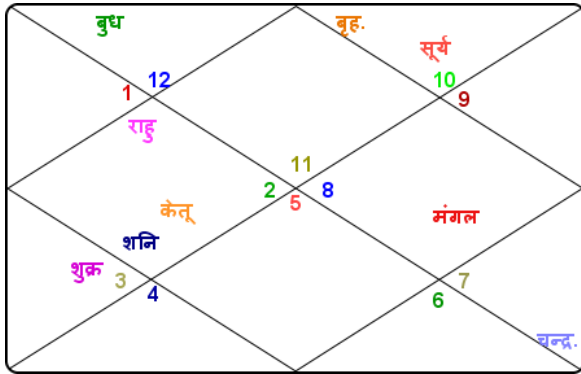
चतुर्विंशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)



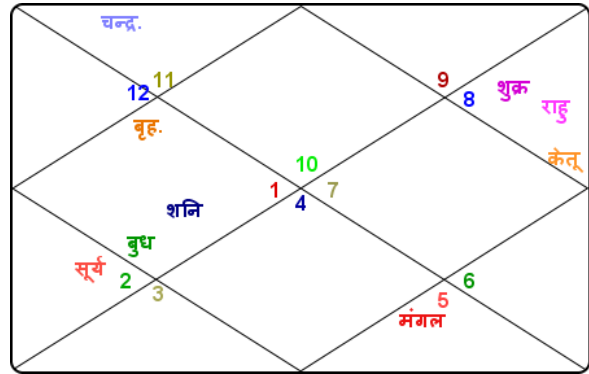
सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

त्रिंशंश कुण्डली (डी 30)



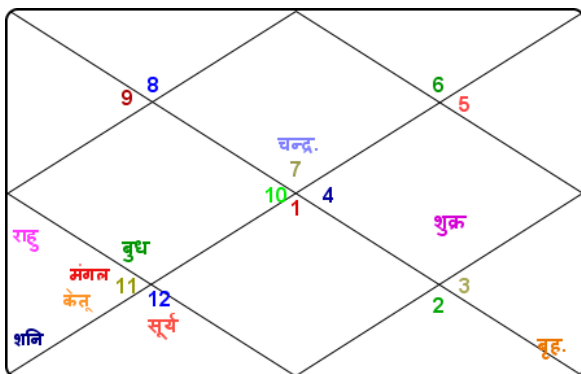
त्रिंशंश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)



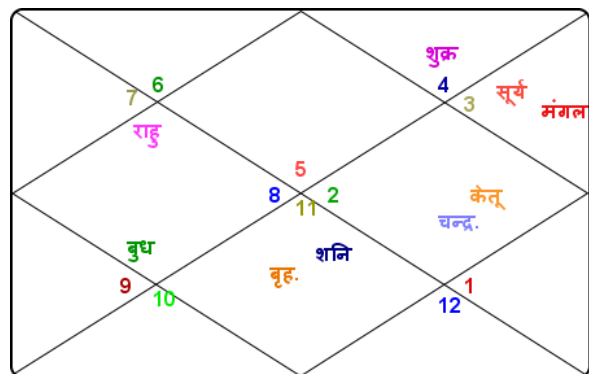
खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)



अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)



षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।



षडबल और भावबल

षडबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
उच्च बल	25.4	37.58	40.82	39.67	45.94	11.16	4.87
सप्त वर्ग बल	86.25	78.75	135	45	86.25	91.88	131.25
युग्म अयुग्म बल	15	15	15	0	0	15	15
केन्द्रादी बल	30	15	60	30	15	15	15
ट्रेक्कन बल	0	15	0	15	0	15	0
स्थान बल	156.65	161.33	250.82	129.67	147.19	148.03	166.12
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	94.94	121.3	261.27	78.59	89.21	111.3	173.04
दिग बल	9.46	1.19	48.88	47.67	55.26	59.55	10.8
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	27.04	2.37	162.94	136.21	157.9	119.11	36.01
नतोन्नत बल	50.92	9	9	50.92	60	50.92	9
पक्ष बल	10.65	49.35	10.65	10.65	49.35	49.35	10.65
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
वर्ष बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
दिन बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	49.31	35.07	38.71	52.63	58.04	36.17	4.9
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
काल बल	155.88	93.42	118.36	114.19	242.39	136.44	114.54
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	139.18	93.42	176.66	101.96	216.42	136.44	170.96
चेष्टा बल	49.31	49.35	15	0	30	45	30
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	98.62	164.51	37.5	0	60	150	75
नैसर्गिक बल	60	51.43	17.14	25.71	34.29	42.86	8.57
द्रिक बल	-27.75	4.52	9.77	-30.32	-10.21	-10.93	-2.21
कुल षडबल	403.55	361.24	459.98	286.92	498.91	420.95	327.83
षडबल (रूप में)	6.73	6.02	7.67	4.78	8.32	7.02	5.46
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछित अंश	103.47	100.35	153.33	68.32	127.93	127.56	109.28
तुलनात्मक स्थिति	4	5	2	7	1	3	6
इष्ट फल	33.58	43.07	24.74	0	37.12	22.41	12.09
कष्ट फल	26.42	16.93	35.26	60	22.88	37.59	47.91
दिप्ति बल	100	49.35	39.42	20.98	20.33	37.95	26.39

भावबल

भाव संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव राशि	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेघ	वृष
भावाधिपति बल	286.92	361.24	361.24	403.55	286.92	459.98	498.91	327.83	327.83	327.83	498.91	420.95
भाव दिग्बल	60	40	10	30	20	50	0	40	20	0	50	40
भाव द्विष्टिबल	-3.82	-14.87	-16.1	-3.5	10.83	-21.04	-16.76	-11.59	8.25	9.53	5.25	3.64
भावबल योग	343.1	386.37	355.14	430.05	317.75	488.94	482.16	356.24	356.08	337.36	554.16	464.59
भावबल (रूप में)	5.72	6.44	5.92	7.17	5.3	8.15	8.04	5.94	5.93	5.62	9.24	7.74
तुलनात्मक स्थिति	10	6	9	5	12	2	3	7	8	11	1	4



विंशोत्तरी दशा (1)

बृहस्पति (9.0 व.1.0 म.11 द.)

दशा बैलेंस

N.C.Lahiri (023:02:29)

Ayanamsha

बृहस्पति (16 वर्ष) 10/08/1941 To 19/09/1950			शनि (19 वर्ष) 19/09/1950 To 19/09/1969			बुध (17 वर्ष) 19/09/1969 To 19/09/1986		
बारहवें भाव	वृष राशि	शत्रु संबन्ध	बारहवें भाव	वृष राशि	मित्र संबन्ध	दूसरे भाव	कर्क राशि	शत्रु संबन्ध
विशेष	रोहिणी (4) नक्षत्र	7 , 10 भावपति	विशेष	कृतिका (3) नक्षत्र	8 , 9 भावपति	विशेष	पुष्य (4) नक्षत्र	1 , 4 भावपति
बृहस्पति	-----	-----	शनि	22-09-1953	09.11	बुध	15-02-1972	28.11
शनि	-----	-----	बुध	01-06-1956	12.12	केतु	12-02-1973	30.52
बुध	26-08-1941	00.00	केतु	11-07-1957	14.81	शुक्र	13-12-1975	31.51
केतु	02-08-1942	00.04	शुक्र	10-09-1960	15.92	सूर्य	19-10-1976	34.34
शुक्र	02-04-1945	00.98	सूर्य	23-08-1961	19.09	चन्द्रमा	21-03-1978	35.19
सूर्य	19-01-1946	03.64	चन्द्रमा	24-03-1963	20.04	मंगल	18-03-1979	36.61
चन्द्रमा	21-05-1947	04.44	मंगल	02-05-1964	21.62	राहु	04-10-1981	37.60
मंगल	26-04-1948	05.78	राहु	09-03-1967	22.73	बृहस्पति	10-01-1984	40.15
राहु	19-09-1950	06.71	बृहस्पति	19-09-1969	25.58	शनि	19-09-1986	42.42
केतु (7 वर्ष) 19/09/1986 To 19/09/1993			शुक्र (20 वर्ष) 19/09/1993 To 19/09/2013			सूर्य (6 वर्ष) 19/09/2013 To 19/09/2019		
दसवें भाव	मीन राशि	सम संबन्ध	तीसरे भाव	सिंह राशि	शत्रु संबन्ध	दूसरे भाव	कर्क राशि	मित्र संबन्ध
विशेष	पूर्वाभाद (4) नक्षत्र	भावपति	विशेष	पुर्वफाल्गु (4) नक्षत्र	12 , 5 भावपति	विशेष	अश्लेषा (3) नक्षत्र	3 भावपति
केतु	15-02-1987	45.11	शुक्र	19-01-1997	52.11	सूर्य	07-01-2014	72.11
शुक्र	16-04-1988	45.52	सूर्य	19-01-1998	55.44	चन्द्रमा	08-07-2014	72.41
सूर्य	22-08-1988	46.69	चन्द्रमा	19-09-1999	56.44	मंगल	13-11-2014	72.91
चन्द्रमा	24-03-1989	47.04	मंगल	19-11-2000	58.11	राहु	07-10-2015	73.26
मंगल	20-08-1989	47.62	राहु	19-11-2003	59.28	बृहस्पति	26-07-2016	74.16
राहु	07-09-1990	48.03	बृहस्पति	20-07-2006	62.28	शनि	08-07-2017	74.96
बृहस्पति	14-08-1991	49.08	शनि	19-09-2009	64.94	बुध	14-05-2018	75.91
शनि	22-09-1992	50.01	बुध	20-07-2012	68.11	केतु	19-09-2018	76.76
बुध	19-09-1993	51.12	केतु	19-09-2013	70.94	शुक्र	19-09-2019	77.11

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



विंशोत्तरी दशा (2)

चन्द्रमा (10 वर्ष)			मंगल (7 वर्ष)			राहु (18 वर्ष)		
19/09/2019 To 19/09/2029			19/09/2029 To 19/09/2036			19/09/2036 To 19/09/2054		
नौवें भाव	कुम्भ राशि	सम संबन्ध	दसवें भाव	मीन राशि	मित्र संबन्ध	चौथे भाव	कन्या राशि	मित्र संबन्ध
पूर्वाभाद (2)		2	रेवती (3)		11, 6	उत्तरफाल्गु (2)		
विशेष	नक्षत्र	भावपति	विशेष	नक्षत्र	भावपति	विशेष	नक्षत्र	भावपति
चन्द्रमा	20-07-2020	78.11	मंगल	15-02-2030	88.11	राहु	02-06-2039	95.11
मंगल	18-02-2021	78.94	राहु	05-03-2031	88.52	बृहस्पति	26-10-2041	97.81
राहु	20-08-2022	79.53	बृहस्पति	09-02-2032	89.57	शनि	01-09-2044	100.21
बृहस्पति	19-12-2023	81.03	शनि	21-03-2033	90.50	बुध	21-03-2047	103.06
शनि	20-07-2025	82.36	बुध	18-03-2034	91.61	केतु	07-04-2048	105.61
बुध	19-12-2026	83.94	केतु	14-08-2034	92.60	शुक्र	08-04-2051	106.66
केतु	20-07-2027	85.36	शुक्र	14-10-2035	93.01	सूर्य	02-03-2052	109.66
शुक्र	21-03-2029	85.94	सूर्य	18-02-2036	94.18	चन्द्रमा	01-09-2053	110.56
सूर्य	19-09-2029	87.61	चन्द्रमा	19-09-2036	94.53	मंगल	19-09-2054	112.06

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	19:09:2019 (16:52:31)	19:09:2029 (16:52:31)
अन्तरदशा	शनि	19:12:2023 (22:52:31)	20:07:2025 (20:52:31)
प्रत्यन्तरदशा	केतु	10:06:2024 (18:32:56)	14:07:2024 (13:50:56)
सूक्ष्मदशा	सूर्य	18:06:2024 (09:05:29)	20:06:2024 (01:39:23)
प्राणदशा	शनि	19:06:2024 (04:21:36)	19:06:2024 (10:46:58)

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलुओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।



बृहस्पति दशा

(10:08:1941 - 19:09:1950)

बृहस्पति अन्तर			शनि अन्तर			बुध अन्तर		
						(10:08:1941 To 26:08:1941)		
बृहस्पति	-----	--	शनि	-----	--	बुध	-----	--
शनि	-----	--	बुध	-----	--	केतु	-----	--
बुध	-----	--	केतु	-----	--	शुक्र	-----	--
केतु	-----	--	शुक्र	-----	--	सूर्य	-----	--
शुक्र	-----	--	सूर्य	-----	--	चन्द्रमा	-----	--
सूर्य	-----	--	चन्द्रमा	-----	--	मंगल	-----	--
चन्द्रमा	-----	--	मंगल	-----	--	राहु	-----	--
मंगल	-----	--	राहु	-----	--	बृहस्पति	-----	--
राहु	-----	--	बृहस्पति	-----	--	शनि	26-08-1941	00.00
केतु अन्तर			शुक्र अन्तर			सूर्य अन्तर		
(26:08:1941 To 02:08:1942)			(02:08:1942 To 02:04:1945)			(02:04:1945 To 19:01:1946)		
केतु	15-09-1941	00.04	शुक्र	11-01-1943	00.98	सूर्य	16-04-1945	03.64
शुक्र	11-11-1941	00.10	सूर्य	28-02-1943	01.42	चन्द्रमा	11-05-1945	03.68
सूर्य	28-11-1941	00.25	चन्द्रमा	21-05-1943	01.56	मंगल	28-05-1945	03.75
चन्द्रमा	26-12-1941	00.30	मंगल	16-07-1943	01.78	राहु	11-07-1945	03.80
मंगल	15-01-1942	00.38	राहु	09-12-1943	01.93	बृहस्पति	19-08-1945	03.92
राहु	07-03-1942	00.43	बृहस्पति	17-04-1944	02.33	शनि	04-10-1945	04.02
बृहस्पति	21-04-1942	00.57	शनि	19-09-1944	02.69	बुध	14-11-1945	04.15
शनि	14-06-1942	00.70	बुध	04-02-1945	03.11	केतु	01-12-1945	04.26
बुध	02-08-1942	00.85	केतु	02-04-1945	03.49	शुक्र	19-01-1946	04.31
चन्द्रमा अन्तर			मंगल अन्तर			राहु अन्तर		
(19:01:1946 To 21:05:1947)			(21:05:1947 To 26:04:1948)			(26:04:1948 To 19:09:1950)		
चन्द्रमा	28-02-1946	04.44	मंगल	09-06-1947	05.78	राहु	04-09-1948	06.71
मंगल	29-03-1946	04.56	राहु	31-07-1947	05.83	बृहस्पति	30-12-1948	07.07
राहु	10-06-1946	04.63	बृहस्पति	14-09-1947	05.97	शनि	18-05-1949	07.39
बृहस्पति	14-08-1946	04.83	शनि	07-11-1947	06.10	बुध	19-09-1949	07.77
शनि	30-10-1946	05.01	बुध	25-12-1947	06.24	केतु	09-11-1949	08.11
बुध	07-01-1947	05.22	केतु	14-01-1948	06.38	शुक्र	04-04-1950	08.25
केतु	04-02-1947	05.41	शुक्र	11-03-1948	06.43	सूर्य	18-05-1950	08.65
शुक्र	26-04-1947	05.49	सूर्य	28-03-1948	06.59	चन्द्रमा	30-07-1950	08.77
सूर्य	21-05-1947	05.71	चन्द्रमा	26-04-1948	06.63	मंगल	19-09-1950	08.97

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



शनि दशा

(19:09:1950 - 19:09:1969)

शनि अन्तर (19:09:1950 To 22:09:1953)			बुध अन्तर (22:09:1953 To 01:06:1956)			केतु अन्तर (01:06:1956 To 11:07:1957)		
शनि	12-03-1951	09.11	बुध	08-02-1954	12.12	केतु	25-06-1956	14.81
बुध	15-08-1951	09.59	केतु	07-04-1954	12.50	शुक्र	31-08-1956	14.88
केतु	18-10-1951	10.01	शुक्र	17-09-1954	12.66	सूर्य	21-09-1956	15.06
शुक्र	18-04-1952	10.19	सूर्य	06-11-1954	13.11	चन्द्रमा	24-10-1956	15.12
सूर्य	12-06-1952	10.69	चन्द्रमा	26-01-1955	13.24	मंगल	17-11-1956	15.21
चन्द्रमा	12-09-1952	10.84	मंगल	25-03-1955	13.47	राहु	17-01-1957	15.27
मंगल	15-11-1952	11.09	राहु	19-08-1955	13.62	बृहस्पति	12-03-1957	15.44
राहु	29-04-1953	11.27	बृहस्पति	28-12-1955	14.03	शनि	15-05-1957	15.59
बृहस्पति	22-09-1953	11.72	शनि	01-06-1956	14.39	बुध	11-07-1957	15.76
शुक्र अन्तर (11:07:1957 To 10:09:1960)			सूर्य अन्तर (10:09:1960 To 23:08:1961)			चन्द्रमा अन्तर (23:08:1961 To 24:03:1963)		
शुक्र	20-01-1958	15.92	सूर्य	27-09-1960	19.09	चन्द्रमा	10-10-1961	20.04
सूर्य	19-03-1958	16.45	चन्द्रमा	26-10-1960	19.13	मंगल	13-11-1961	20.17
चन्द्रमा	23-06-1958	16.61	मंगल	15-11-1960	19.21	राहु	07-02-1962	20.26
मंगल	29-08-1958	16.87	राहु	07-01-1961	19.27	बृहस्पति	25-04-1962	20.50
राहु	19-02-1959	17.05	बृहस्पति	22-02-1961	19.41	शनि	26-07-1962	20.71
बृहस्पति	23-07-1959	17.53	शनि	18-04-1961	19.54	बुध	16-10-1962	20.96
शनि	22-01-1960	17.95	बुध	06-06-1961	19.69	केतु	19-11-1962	21.18
बुध	04-07-1960	18.45	केतु	26-06-1961	19.82	शुक्र	23-02-1963	21.28
केतु	10-09-1960	18.90	शुक्र	23-08-1961	19.88	सूर्य	24-03-1963	21.54
मंगल अन्तर (24:03:1963 To 02:05:1964)			राहु अन्तर (02:05:1964 To 09:03:1967)			बृहस्पति अन्तर (09:03:1967 To 19:09:1969)		
मंगल	16-04-1963	21.62	राहु	05-10-1964	22.73	बृहस्पति	10-07-1967	25.58
राहु	16-06-1963	21.68	बृहस्पति	21-02-1965	23.16	शनि	03-12-1967	25.92
बृहस्पति	09-08-1963	21.85	शनि	05-08-1965	23.54	बुध	13-04-1968	26.32
शनि	12-10-1963	22.00	बुध	30-12-1965	23.99	केतु	06-06-1968	26.68
बुध	08-12-1963	22.17	केतु	01-03-1966	24.39	शुक्र	07-11-1968	26.82
केतु	01-01-1964	22.33	शुक्र	21-08-1966	24.56	सूर्य	23-12-1968	27.25
शुक्र	09-03-1964	22.40	सूर्य	12-10-1966	25.03	चन्द्रमा	11-03-1969	27.37
सूर्य	29-03-1964	22.58	चन्द्रमा	07-01-1967	25.17	मंगल	04-05-1969	27.58
चन्द्रमा	02-05-1964	22.64	मंगल	09-03-1967	25.41	राहु	19-09-1969	27.73

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



बुध दशा

(19:09:1969 - 19:09:1986)

बुध अन्तर (19:09:1969 To 15:02:1972)			केतु अन्तर (15:02:1972 To 12:02:1973)			शुक्र अन्तर (12:02:1973 To 13:12:1975)		
बुध	22-01-1970	28.11	केतु	08-03-1972	30.52	शुक्र	04-08-1973	31.51
केतु	14-03-1970	28.45	शुक्र	07-05-1972	30.58	सूर्य	24-09-1973	31.98
शुक्र	08-08-1970	28.59	सूर्य	25-05-1972	30.74	चन्द्रमा	19-12-1973	32.13
सूर्य	20-09-1970	28.99	चन्द्रमा	24-06-1972	30.79	मंगल	18-02-1974	32.36
चन्द्रमा	03-12-1970	29.11	मंगल	16-07-1972	30.87	राहु	23-07-1974	32.53
मंगल	23-01-1971	29.32	राहु	08-09-1972	30.93	बृहस्पति	08-12-1974	32.95
राहु	04-06-1971	29.46	बृहस्पति	26-10-1972	31.08	शनि	21-05-1975	33.33
बृहस्पति	29-09-1971	29.82	शनि	23-12-1972	31.21	बुध	14-10-1975	33.78
शनि	15-02-1972	30.14	बुध	12-02-1973	31.37	केतु	13-12-1975	34.18
सूर्य अन्तर (13:12:1975 To 19:10:1976)			चन्द्रमा अन्तर (19:10:1976 To 21:03:1978)			मंगल अन्तर (21:03:1978 To 18:03:1979)		
सूर्य	29-12-1975	34.34	चन्द्रमा	02-12-1976	35.19	मंगल	11-04-1978	36.61
चन्द्रमा	24-01-1976	34.39	मंगल	01-01-1977	35.31	राहु	04-06-1978	36.67
मंगल	11-02-1976	34.46	राहु	19-03-1977	35.40	बृहस्पति	22-07-1978	36.82
राहु	29-03-1976	34.51	बृहस्पति	27-05-1977	35.61	शनि	18-09-1978	36.95
बृहस्पति	09-05-1976	34.64	शनि	17-08-1977	35.80	बुध	08-11-1978	37.11
शनि	27-06-1976	34.75	बुध	30-10-1977	36.02	केतु	29-11-1978	37.25
बुध	10-08-1976	34.88	केतु	29-11-1977	36.22	शुक्र	28-01-1979	37.31
केतु	29-08-1976	35.00	शुक्र	23-02-1978	36.30	सूर्य	15-02-1979	37.47
शुक्र	19-10-1976	35.05	सूर्य	21-03-1978	36.54	चन्द्रमा	18-03-1979	37.52
राहु अन्तर (18:03:1979 To 04:10:1981)			बृहस्पति अन्तर (04:10:1981 To 10:01:1984)			शनि अन्तर (10:01:1984 To 19:09:1986)		
राहु	04-08-1979	37.60	बृहस्पति	23-01-1982	40.15	शनि	14-06-1984	42.42
बृहस्पति	06-12-1979	37.99	शनि	03-06-1982	40.46	बुध	31-10-1984	42.85
शनि	02-05-1980	38.33	बुध	28-09-1982	40.81	केतु	28-12-1984	43.23
बुध	11-09-1980	38.73	केतु	15-11-1982	41.14	शुक्र	10-06-1985	43.38
केतु	05-11-1980	39.09	शुक्र	02-04-1983	41.27	सूर्य	29-07-1985	43.83
शुक्र	09-04-1981	39.24	सूर्य	13-05-1983	41.65	चन्द्रमा	19-10-1985	43.97
सूर्य	26-05-1981	39.66	चन्द्रमा	21-07-1983	41.76	मंगल	15-12-1985	44.19
चन्द्रमा	11-08-1981	39.79	मंगल	08-09-1983	41.95	राहु	11-05-1986	44.35
मंगल	04-10-1981	40.00	राहु	10-01-1984	42.08	बृहस्पति	19-09-1986	44.75

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



केतु दशा

(19:09:1986 - 19:09:1993)

केतु अन्तर (19:09:1986 To 15:02:1987)			शुक्र अन्तर (15:02:1987 To 16:04:1988)			सूर्य अन्तर (16:04:1988 To 22:08:1988)		
केतु	28-09-1986	45.11	शुक्र	27-04-1987	45.52	सूर्य	23-04-1988	46.69
शुक्र	23-10-1986	45.14	सूर्य	19-05-1987	45.71	चन्द्रमा	03-05-1988	46.70
सूर्य	30-10-1986	45.20	चन्द्रमा	23-06-1987	45.77	मंगल	11-05-1988	46.73
चन्द्रमा	12-11-1986	45.22	मंगल	18-07-1987	45.87	राहु	30-05-1988	46.75
मंगल	20-11-1986	45.26	राहु	20-09-1987	45.94	बृहस्पति	16-06-1988	46.81
राहु	13-12-1986	45.28	बृहस्पति	15-11-1987	46.11	शनि	07-07-1988	46.85
बृहस्पति	02-01-1987	45.34	शनि	22-01-1988	46.27	बुध	25-07-1988	46.91
शनि	25-01-1987	45.40	बुध	22-03-1988	46.45	केतु	01-08-1988	46.96
बुध	15-02-1987	45.46	केतु	16-04-1988	46.62	शुक्र	22-08-1988	46.98
चन्द्रमा अन्तर (22:08:1988 To 24:03:1989)			मंगल अन्तर (24:03:1989 To 20:08:1989)			राहु अन्तर (20:08:1989 To 07:09:1990)		
चन्द्रमा	09-09-1988	47.04	मंगल	01-04-1989	47.62	राहु	16-10-1989	48.03
मंगल	22-09-1988	47.08	राहु	24-04-1989	47.64	बृहस्पति	06-12-1989	48.19
राहु	24-10-1988	47.12	बृहस्पति	14-05-1989	47.70	शनि	05-02-1990	48.33
बृहस्पति	21-11-1988	47.21	शनि	06-06-1989	47.76	बुध	31-03-1990	48.49
शनि	25-12-1988	47.28	बुध	27-06-1989	47.82	केतु	23-04-1990	48.64
बुध	24-01-1989	47.38	केतु	06-07-1989	47.88	शुक्र	26-06-1990	48.70
केतु	06-02-1989	47.46	शुक्र	31-07-1989	47.91	सूर्य	15-07-1990	48.88
शुक्र	13-03-1989	47.49	सूर्य	07-08-1989	47.97	चन्द्रमा	16-08-1990	48.93
सूर्य	24-03-1989	47.59	चन्द्रमा	20-08-1989	47.99	मंगल	07-09-1990	49.02
बृहस्पति अन्तर (07:09:1990 To 14:08:1991)			शनि अन्तर (14:08:1991 To 22:09:1992)			बुध अन्तर (22:09:1992 To 19:09:1993)		
बृहस्पति	22-10-1990	49.08	शनि	17-10-1991	50.01	बुध	12-11-1992	51.12
शनि	15-12-1990	49.20	बुध	13-12-1991	50.19	केतु	04-12-1992	51.26
बुध	02-02-1991	49.35	केतु	06-01-1992	50.34	शुक्र	02-02-1993	51.32
केतु	22-02-1991	49.48	शुक्र	13-03-1992	50.41	सूर्य	20-02-1993	51.48
शुक्र	19-04-1991	49.54	सूर्य	03-04-1992	50.59	चन्द्रमा	22-03-1993	51.53
सूर्य	06-05-1991	49.69	चन्द्रमा	06-05-1992	50.65	मंगल	12-04-1993	51.62
चन्द्रमा	04-06-1991	49.74	मंगल	30-05-1992	50.74	राहु	06-06-1993	51.67
मंगल	24-06-1991	49.82	राहु	30-07-1992	50.81	बृहस्पति	24-07-1993	51.82
राहु	14-08-1991	49.87	बृहस्पति	22-09-1992	50.97	शनि	19-09-1993	51.95

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



शुक्र दशा

(19:09:1993 - 19:09:2013)

शुक्र अन्तर (19:09:1993 To 19:01:1997)			सूर्य अन्तर (19:01:1997 To 19:01:1998)			चन्द्रमा अन्तर (19:01:1998 To 19:09:1999)		
शुक्र	10-04-1994	52.11	सूर्य	06-02-1997	55.44	चन्द्रमा	11-03-1998	56.44
सूर्य	10-06-1994	52.67	चन्द्रमा	09-03-1997	55.49	मंगल	15-04-1998	56.58
चन्द्रमा	19-09-1994	52.83	मंगल	30-03-1997	55.58	राहु	15-07-1998	56.68
मंगल	29-11-1994	53.11	राहु	24-05-1997	55.64	बृहस्पति	04-10-1998	56.93
राहु	31-05-1995	53.31	बृहस्पति	11-07-1997	55.79	शनि	09-01-1999	57.15
बृहस्पति	09-11-1995	53.81	शनि	07-09-1997	55.92	बुध	05-04-1999	57.42
शनि	20-05-1996	54.25	बुध	29-10-1997	56.08	केतु	10-05-1999	57.65
बुध	09-11-1996	54.78	केतु	19-11-1997	56.22	शुक्र	20-08-1999	57.75
केतु	19-01-1997	55.25	शुक्र	19-01-1998	56.28	सूर्य	19-09-1999	58.03
मंगल अन्तर (19:09:1999 To 19:11:2000)			राहु अन्तर (19:11:2000 To 19:11:2003)			बृहस्पति अन्तर (19:11:2003 To 20:07:2006)		
मंगल	14-10-1999	58.11	राहु	02-05-2001	59.28	बृहस्पति	28-03-2004	62.28
राहु	17-12-1999	58.18	बृहस्पति	25-09-2001	59.73	शनि	30-08-2004	62.63
बृहस्पति	12-02-2000	58.35	शनि	18-03-2002	60.13	बुध	15-01-2005	63.06
शनि	19-04-2000	58.51	बुध	20-08-2002	60.60	केतु	13-03-2005	63.43
बुध	19-06-2000	58.69	केतु	23-10-2002	61.03	शुक्र	22-08-2005	63.59
केतु	14-07-2000	58.86	शुक्र	23-04-2003	61.20	सूर्य	09-10-2005	64.03
शुक्र	23-09-2000	58.93	सूर्य	17-06-2003	61.70	चन्द्रमा	30-12-2005	64.17
सूर्य	14-10-2000	59.12	चन्द्रमा	16-09-2003	61.85	मंगल	24-02-2006	64.39
चन्द्रमा	19-11-2000	59.18	मंगल	19-11-2003	62.10	राहु	20-07-2006	64.54
शनि अन्तर (20:07:2006 To 19:09:2009)			बुध अन्तर (19:09:2009 To 20:07:2012)			केतु अन्तर (20:07:2012 To 19:09:2013)		
शनि	19-01-2007	64.94	बुध	13-02-2010	68.11	केतु	14-08-2012	70.94
बुध	02-07-2007	65.45	केतु	14-04-2010	68.51	शुक्र	24-10-2012	71.01
केतु	08-09-2007	65.89	शुक्र	03-10-2010	68.68	सूर्य	14-11-2012	71.21
शुक्र	18-03-2008	66.08	सूर्य	24-11-2010	69.15	चन्द्रमा	20-12-2012	71.27
सूर्य	15-05-2008	66.61	चन्द्रमा	18-02-2011	69.29	मंगल	14-01-2013	71.36
चन्द्रमा	20-08-2008	66.77	मंगल	20-04-2011	69.53	राहु	19-03-2013	71.43
मंगल	27-10-2008	67.03	राहु	22-09-2011	69.69	बृहस्पति	14-05-2013	71.61
राहु	18-04-2009	67.21	बृहस्पति	07-02-2012	70.12	शनि	21-07-2013	71.76
बृहस्पति	19-09-2009	67.69	शनि	20-07-2012	70.50	बुध	19-09-2013	71.95

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



सूर्य दशा

(19:09:2013 - 19:09:2019)

सूर्य अन्तर (19:09:2013 To 07:01:2014)			चन्द्रमा अन्तर (07:01:2014 To 08:07:2014)			मंगल अन्तर (08:07:2014 To 13:11:2014)		
सूर्य	25-09-2013	72.11	चन्द्रमा	22-01-2014	72.41	मंगल	16-07-2014	72.91
चन्द्रमा	04-10-2013	72.13	मंगल	02-02-2014	72.45	राहु	04-08-2014	72.93
मंगल	10-10-2013	72.15	राहु	01-03-2014	72.48	बृहस्पति	21-08-2014	72.98
राहु	27-10-2013	72.17	बृहस्पति	25-03-2014	72.56	शनि	10-09-2014	73.03
बृहस्पति	10-11-2013	72.21	शनि	23-04-2014	72.62	बुध	28-09-2014	73.09
शनि	28-11-2013	72.25	बुध	19-05-2014	72.70	केतु	06-10-2014	73.14
बुध	13-12-2013	72.30	केतु	30-05-2014	72.77	शुक्र	27-10-2014	73.16
केतु	19-12-2013	72.34	शुक्र	29-06-2014	72.80	सूर्य	02-11-2014	73.21
शुक्र	07-01-2014	72.36	सूर्य	08-07-2014	72.89	चन्द्रमा	13-11-2014	73.23
राहु अन्तर (13:11:2014 To 07:10:2015)			बृहस्पति अन्तर (07:10:2015 To 26:07:2016)			शनि अन्तर (26:07:2016 To 08:07:2017)		
राहु	01-01-2015	73.26	बृहस्पति	15-11-2015	74.16	शनि	19-09-2016	74.96
बृहस्पति	14-02-2015	73.40	शनि	01-01-2016	74.27	बुध	07-11-2016	75.11
शनि	07-04-2015	73.52	बुध	11-02-2016	74.39	केतु	28-11-2016	75.25
बुध	24-05-2015	73.66	केतु	28-02-2016	74.51	शुक्र	24-01-2017	75.30
केतु	12-06-2015	73.79	शुक्र	17-04-2016	74.55	सूर्य	11-02-2017	75.46
शुक्र	05-08-2015	73.84	सूर्य	02-05-2016	74.69	चन्द्रमा	12-03-2017	75.51
सूर्य	22-08-2015	73.99	चन्द्रमा	26-05-2016	74.73	मंगल	01-04-2017	75.59
चन्द्रमा	18-09-2015	74.03	मंगल	12-06-2016	74.79	राहु	23-05-2017	75.64
मंगल	07-10-2015	74.11	राहु	26-07-2016	74.84	बृहस्पति	08-07-2017	75.78
बुध अन्तर (08:07:2017 To 14:05:2018)			केतु अन्तर (14:05:2018 To 19:09:2018)			शुक्र अन्तर (19:09:2018 To 19:09:2019)		
बुध	21-08-2017	75.91	केतु	22-05-2018	76.76	शुक्र	19-11-2018	77.11
केतु	08-09-2017	76.03	शुक्र	12-06-2018	76.78	सूर्य	07-12-2018	77.28
शुक्र	30-10-2017	76.08	सूर्य	19-06-2018	76.84	चन्द्रमा	07-01-2019	77.33
सूर्य	14-11-2017	76.22	चन्द्रमा	29-06-2018	76.86	मंगल	28-01-2019	77.41
चन्द्रमा	10-12-2017	76.27	मंगल	07-07-2018	76.89	राहु	24-03-2019	77.47
मंगल	28-12-2017	76.34	राहु	26-07-2018	76.91	बृहस्पति	11-05-2019	77.62
राहु	13-02-2018	76.39	बृहस्पति	12-08-2018	76.96	शनि	08-07-2019	77.75
बृहस्पति	26-03-2018	76.51	शनि	01-09-2018	77.01	बुध	29-08-2019	77.91
शनि	14-05-2018	76.63	बुध	19-09-2018	77.06	केतु	19-09-2019	78.05

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



चन्द्रमा दशा

(19:09:2019 - 19:09:2029)

चन्द्रमा अन्तर (19:09:2019 To 20:07:2020)			मंगल अन्तर (20:07:2020 To 18:02:2021)			राहु अन्तर (18:02:2021 To 20:08:2022)		
चन्द्रमा	15-10-2019	78.11	मंगल	01-08-2020	78.94	राहु	11-05-2021	79.53
मंगल	01-11-2019	78.18	राहु	02-09-2020	78.98	बृहस्पति	23-07-2021	79.75
राहु	17-12-2019	78.23	बृहस्पति	01-10-2020	79.07	शनि	18-10-2021	79.95
बृहस्पति	27-01-2020	78.35	शनि	04-11-2020	79.14	बुध	04-01-2022	80.19
शनि	15-03-2020	78.47	बुध	04-12-2020	79.24	केतु	05-02-2022	80.40
बुध	27-04-2020	78.60	केतु	16-12-2020	79.32	शुक्र	07-05-2022	80.49
केतु	15-05-2020	78.72	शुक्र	21-01-2021	79.35	सूर्य	03-06-2022	80.74
शुक्र	05-07-2020	78.76	सूर्य	01-02-2021	79.45	चन्द्रमा	19-07-2022	80.82
सूर्य	20-07-2020	78.90	चन्द्रमा	18-02-2021	79.48	मंगल	20-08-2022	80.94
बृहस्पति अन्तर (20:08:2022 To 19:12:2023)			शनि अन्तर (19:12:2023 To 20:07:2025)			बुध अन्तर (20:07:2025 To 19:12:2026)		
बृहस्पति	24-10-2022	81.03	शनि	20-03-2024	82.36	बुध	02-10-2025	83.94
शनि	09-01-2023	81.21	बुध	10-06-2024	82.61	केतु	01-11-2025	84.15
बुध	19-03-2023	81.42	केतु	14-07-2024	82.84	शुक्र	26-01-2026	84.23
केतु	16-04-2023	81.61	शुक्र	19-10-2024	82.93	सूर्य	21-02-2026	84.46
शुक्र	06-07-2023	81.68	सूर्य	17-11-2024	83.19	चन्द्रमा	05-04-2026	84.53
सूर्य	31-07-2023	81.91	चन्द्रमा	04-01-2025	83.27	मंगल	05-05-2026	84.65
चन्द्रमा	09-09-2023	81.97	मंगल	07-02-2025	83.40	राहु	22-07-2026	84.74
मंगल	07-10-2023	82.08	राहु	04-05-2025	83.50	बृहस्पति	29-09-2026	84.95
राहु	19-12-2023	82.16	बृहस्पति	20-07-2025	83.73	शनि	19-12-2026	85.14
केतु अन्तर (19:12:2026 To 20:07:2027)			शुक्र अन्तर (20:07:2027 To 21:03:2029)			सूर्य अन्तर (21:03:2029 To 19:09:2029)		
केतु	01-01-2027	85.36	शुक्र	30-10-2027	85.94	सूर्य	30-03-2029	87.61
शुक्र	05-02-2027	85.40	सूर्य	29-11-2027	86.22	चन्द्रमा	14-04-2029	87.64
सूर्य	16-02-2027	85.49	चन्द्रमा	19-01-2028	86.31	मंगल	25-04-2029	87.68
चन्द्रमा	06-03-2027	85.52	मंगल	24-02-2028	86.44	राहु	22-05-2029	87.71
मंगल	18-03-2027	85.57	राहु	25-05-2028	86.54	बृहस्पति	15-06-2029	87.78
राहु	19-04-2027	85.60	बृहस्पति	14-08-2028	86.79	शनि	14-07-2029	87.85
बृहस्पति	17-05-2027	85.69	शनि	19-11-2028	87.01	बुध	09-08-2029	87.93
शनि	20-06-2027	85.77	बुध	13-02-2029	87.28	केतु	20-08-2029	88.00
बुध	20-07-2027	85.86	केतु	21-03-2029	87.51	शुक्र	19-09-2029	88.03

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



मंगल दशा

(19:09:2029 - 19:09:2036)

मंगल अन्तर (19:09:2029 To 15:02:2030)			राहु अन्तर (15:02:2030 To 05:03:2031)			बृहस्पति अन्तर (05:03:2031 To 09:02:2032)		
मंगल	28-09-2029	88.11	राहु	14-04-2030	88.52	बृहस्पति	20-04-2031	89.57
राहु	20-10-2029	88.14	बृहस्पति	04-06-2030	88.68	शनि	13-06-2031	89.69
बृहस्पति	09-11-2029	88.20	शनि	04-08-2030	88.82	बुध	31-07-2031	89.84
शनि	03-12-2029	88.25	बुध	27-09-2030	88.98	केतु	20-08-2031	89.97
बुध	24-12-2029	88.32	केतु	19-10-2030	89.13	शुक्र	16-10-2031	90.03
केतु	02-01-2030	88.37	शुक्र	22-12-2030	89.19	सूर्य	02-11-2031	90.18
शुक्र	26-01-2030	88.40	सूर्य	10-01-2031	89.37	चन्द्रमा	30-11-2031	90.23
सूर्य	03-02-2030	88.47	चन्द्रमा	11-02-2031	89.42	मंगल	20-12-2031	90.31
चन्द्रमा	15-02-2030	88.49	मंगल	05-03-2031	89.51	राहु	09-02-2032	90.36
शनि अन्तर (09:02:2032 To 21:03:2033)			बुध अन्तर (21:03:2033 To 18:03:2034)			केतु अन्तर (18:03:2034 To 14:08:2034)		
शनि	14-04-2032	90.50	बुध	11-05-2033	91.61	केतु	26-03-2034	92.60
बुध	10-06-2032	90.68	केतु	01-06-2033	91.75	शुक्र	20-04-2034	92.63
केतु	04-07-2032	90.84	शुक्र	31-07-2033	91.81	सूर्य	28-04-2034	92.69
शुक्र	09-09-2032	90.90	सूर्य	19-08-2033	91.97	चन्द्रमा	10-05-2034	92.72
सूर्य	30-09-2032	91.08	चन्द्रमा	18-09-2033	92.02	मंगल	19-05-2034	92.75
चन्द्रमा	02-11-2032	91.14	मंगल	09-10-2033	92.11	राहु	10-06-2034	92.77
मंगल	26-11-2032	91.23	राहु	02-12-2033	92.16	बृहस्पति	30-06-2034	92.83
राहु	26-01-2033	91.30	बृहस्पति	19-01-2034	92.31	शनि	24-07-2034	92.89
बृहस्पति	21-03-2033	91.46	शनि	18-03-2034	92.45	बुध	14-08-2034	92.95
शुक्र अन्तर (14:08:2034 To 14:10:2035)			सूर्य अन्तर (14:10:2035 To 18:02:2036)			चन्द्रमा अन्तर (18:02:2036 To 19:09:2036)		
शुक्र	24-10-2034	93.01	सूर्य	20-10-2035	94.18	चन्द्रमा	07-03-2036	94.53
सूर्य	14-11-2034	93.21	चन्द्रमा	31-10-2035	94.20	मंगल	20-03-2036	94.58
चन्द्रमा	19-12-2034	93.26	मंगल	07-11-2035	94.22	राहु	21-04-2036	94.61
मंगल	13-01-2035	93.36	राहु	26-11-2035	94.25	बृहस्पति	19-05-2036	94.70
राहु	18-03-2035	93.43	बृहस्पति	13-12-2035	94.30	शनि	22-06-2036	94.78
बृहस्पति	14-05-2035	93.60	शनि	02-01-2036	94.34	बुध	22-07-2036	94.87
शनि	20-07-2035	93.76	बुध	21-01-2036	94.40	केतु	04-08-2036	94.95
बुध	19-09-2035	93.94	केतु	28-01-2036	94.45	शुक्र	08-09-2036	94.98
केतु	14-10-2035	94.11	शुक्र	18-02-2036	94.47	सूर्य	19-09-2036	95.08

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



राहु दशा

(19:09:2036 - 19:09:2054)

राहु अन्तर (19:09:2036 To 02:06:2039)			बृहस्पति अन्तर (02:06:2039 To 26:10:2041)			शनि अन्तर (26:10:2041 To 01:09:2044)		
राहु	14-02-2037	95.11	बृहस्पति	27-09-2039	97.81	शनि	08-04-2042	100.21
बृहस्पति	25-06-2037	95.52	शनि	12-02-2040	98.13	बुध	03-09-2042	100.66
शनि	28-11-2037	95.88	बुध	16-06-2040	98.51	केतु	02-11-2042	101.07
बुध	17-04-2038	96.30	केतु	06-08-2040	98.85	शुक्र	25-04-2043	101.23
केतु	14-06-2038	96.69	शुक्र	30-12-2040	98.99	सूर्य	16-06-2043	101.71
शुक्र	25-11-2038	96.84	सूर्य	12-02-2041	99.39	चन्द्रमा	11-09-2043	101.85
सूर्य	13-01-2039	97.29	चन्द्रमा	26-04-2041	99.51	मंगल	10-11-2043	102.09
चन्द्रमा	05-04-2039	97.43	मंगल	16-06-2041	99.71	राहु	15-04-2044	102.25
मंगल	02-06-2039	97.65	राहु	26-10-2041	99.85	बृहस्पति	01-09-2044	102.68
बुध अन्तर (01:09:2044 To 21:03:2047)			केतु अन्तर (21:03:2047 To 07:04:2048)			शुक्र अन्तर (07:04:2048 To 08:04:2051)		
बुध	11-01-2045	103.06	केतु	12-04-2047	105.61	शुक्र	07-10-2048	106.66
केतु	06-03-2045	103.42	शुक्र	15-06-2047	105.67	सूर्य	01-12-2048	107.16
शुक्र	08-08-2045	103.57	सूर्य	04-07-2047	105.85	चन्द्रमा	02-03-2049	107.31
सूर्य	24-09-2045	104.00	चन्द्रमा	05-08-2047	105.90	मंगल	05-05-2049	107.56
चन्द्रमा	10-12-2045	104.12	मंगल	27-08-2047	105.99	राहु	17-10-2049	107.74
मंगल	03-02-2046	104.34	राहु	24-10-2047	106.05	बृहस्पति	12-03-2050	108.19
राहु	22-06-2046	104.49	बृहस्पति	14-12-2047	106.21	शनि	01-09-2050	108.59
बृहस्पति	24-10-2046	104.87	शनि	13-02-2048	106.35	बुध	03-02-2051	109.06
शनि	21-03-2047	105.21	बुध	07-04-2048	106.51	केतु	08-04-2051	109.49
सूर्य अन्तर (08:04:2051 To 02:03:2052)			चन्द्रमा अन्तर (02:03:2052 To 01:09:2053)			मंगल अन्तर (01:09:2053 To 19:09:2054)		
सूर्य	24-04-2051	109.66	चन्द्रमा	16-04-2052	110.56	मंगल	23-09-2053	112.06
चन्द्रमा	22-05-2051	109.71	मंगल	18-05-2052	110.69	राहु	20-11-2053	112.12
मंगल	10-06-2051	109.78	राहु	09-08-2052	110.77	बृहस्पति	10-01-2054	112.28
राहु	29-07-2051	109.83	बृहस्पति	21-10-2052	111.00	शनि	12-03-2054	112.42
बृहस्पति	11-09-2051	109.97	शनि	16-01-2053	111.20	बुध	05-05-2054	112.59
शनि	02-11-2051	110.09	बुध	03-04-2053	111.44	केतु	27-05-2054	112.74
बुध	19-12-2051	110.23	केतु	05-05-2053	111.65	शुक्र	30-07-2054	112.80
केतु	07-01-2052	110.36	शुक्र	05-08-2053	111.74	सूर्य	18-08-2054	112.97
शुक्र	02-03-2052	110.41	सूर्य	01-09-2053	111.99	चन्द्रमा	19-09-2054	113.02

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



कुण्डली में प्राप्त दोषों का विवेचन और उपाय

लाल किताब ज्योतिष में, जीवन की चुनौतियों से निपटने और सफलता पाने के लिए कुंडली में स्थित महत्वपूर्ण दोषों या विकारों की पहचान करना और उनका समाधान करना आवश्यक है। ये दोष, जिनमें पितृ ऋण, अंधा टेवा, आधा अंधा टेवा, मांगलिक दोष और काल सर्प दोष शामिल हैं, किसी के जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे स्वास्थ्य, वित्त, रिश्ते और सामान्य भलाई पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। इन दोषों के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए उनके उपचार की तलाश करना महत्वपूर्ण है। उपचार विशिष्ट अनुष्ठानों, प्रार्थना करने, दान करने, रत्न पहनने से लेकर जीवनशैली में बदलाव लाने तक हो सकते हैं। ये उपचारात्मक उपाय ग्रहों के प्रभाव को संतुलित करने, बाधाओं को दूर करने और अधिक शांतिपूर्ण और समृद्ध जीवन का मार्ग बनाने में मदद कर सकते हैं।



कुण्डली में लागू होने वाले पितृ ऋण

यदि पूर्वजों में से किसी ने कोई बुरा या पाप कर्म किया है, तो यह पितृ ऋण में बदल जाता है और इसे परिवार के किसी सदस्य द्वारा चुकाया जाना चाहिए। इसीलिए उन्हें कष्ट होता है। कभी-कभी, हम अपने बड़ों के पापों से अविश्वसनीय और आश्चर्यजनक तरीके से रहस्यमय तरीके से प्रभावित होते हैं। निहितार्थ यह है कि अपराध कोई और करता है, और जुर्माना कोई और व्यक्ति भरता है। पैतृक ऋण के मामले में अक्सर सजा किसी करीबी रिश्तेदार को भुगतनी पड़ती है। पितृ ऋण का विचार जन्म कुंडली से किया जाता है। एक बार ऋण की पहचान हो जाने पर उसका निवारण भी किसी रक्त संबंधी को ही करना पड़ता है। पैतृक ऋण का भुगतान किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता है। रक्त संबंधियों में बहनें, बेटियाँ और उनके बच्चे जैसे पोते, भतीजे, भतीजी आदि शामिल हैं। लाल किताब के अनुसार मनुष्य नौ ग्रहों के आधार पर नौ प्रकार के ऋण लेता है। इनमें आत्म-ऋण, मातृ-ऋण, पारिवारिक ऋण, बहन/बेटी का ऋण, पितृ-ऋण, स्त्री-ऋण, निर्दयता-ऋण, जीवन भर का ऋण और दैवीय ऋण शामिल हैं।



पितृ ऋण

कुण्डली में बुध दूसरे, पाँचवें, नवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में पितृ ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

पितृ ऋण के कारण -

- 1- यदि कुल पुरोहित बदलने की आवश्यकता होती है।
- 2- यदि घर के आस-पास का कोई धार्मिक स्थल नष्ट कर दिया गया हो।
- 3- घर के आस-पास में कोई पीपल या बरगद का पेड़ नष्ट कर दिया गया हो।

पितृ ऋण के लक्षण -

लाल किताब के अनुसार, आपके बाल में जब सफेदी आने लगती है, तो घर की धन-संपत्ति अपने आप नष्ट होनी शुरू हो जाती है तथा सिर पर चोटी के स्थान से बाल गायब हो जाते हैं और गले में माला या कंठी पहनना शुरू कर सकते हैं। आपके बारे में गलत अफवाहें उड़नी शुरू हो जाती है। आपको बिना गलती के ही जेल जाना पड़ सकता है।

पितृ ऋण के उपाय -

- 1- आप अपने परिवार के सारे सदस्यों से बराबर-बराबर पैसा इकट्ठा करें और किसी धार्मिक स्थान में दान करें।
- 2- अपने घर के आस-पास के किसी धार्मिक स्थल पर जाकर वहाँ की साफ-सफाई करें।
- 3- घर के आस-पास कोई पीपल या बरगद का पेड़ हो तो उसकी सेवा तथा देख-भाल करें और उसमें पानी डालें।



स्त्री ऋण

कुण्डली में सूर्य दूसरे या सातवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में स्त्री ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

स्त्री ऋण के कारण -

1- आपके घर में किसी गर्भवती स्त्री के साथ गर्भावस्था के दौरान बुरा व्यवहार किया गया हो अथवा आपके पारिवारिक सदस्य आपस में हमेशा लड़ाई-झगड़ा करते रहे हों।

2- आपके घर में कोई भी व्यक्ति जानवरों पर दया ना करता हो, विशेषतः गाय पर या किसी खुशी के मौके पर दुखद घटना घट जाये।

स्त्री ऋण के लक्षण -

आपके परिवार में किसी खुशी के मौके पर किसी की मृत्यु हो जाती है, तो यह शुक्र खराब होने की सबसे बड़ी निशानी है।

स्त्री ऋण के उपाय -

1- आपको अपने परिवार के सारे सदस्यों से बारबर मात्रा में धन लेकर उसका हरा चारा खरीदकर कम से कम 100 गायों को खिलाना चाहिए।

2- आपको अपना पहनावा बढ़िया रखना चाहिए, फटे-पुराने कपड़े न पहनें।



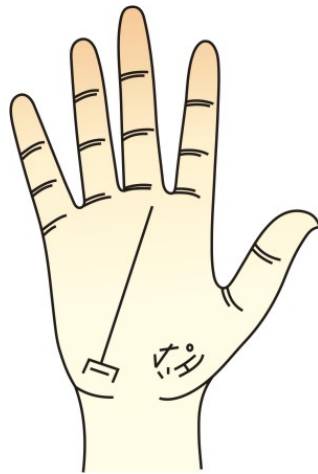
अंधे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह में बैठ जायें या कोई नीच ग्रह बैठा हो अथवा कोई ग्रह शत्रु ग्रह की पूर्ण दृष्टि में हो, तो ऐसी कुण्डली को अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से संबद्ध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक परस्पर शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें (युति या दृष्टि से) या नीच का ग्रह हो तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्थिति पैदा हो जाती है। जातक की नौकरी या व्यापार में स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधों को भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष- आपकी कुण्डली के दसवें भाव में दो या दो से अधिक ग्रह स्थित हैं, जो आपस में शत्रु हैं (युति या दृष्टि से) या कोई नीच का ग्रह है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) है।



बारहवें भाव में स्थित बृहस्पति का फल



लाल किताब में बारहवें भाव में स्थित बृहस्पति को “उत्तम ज्ञानी” कहकर पुकारा गया है। आप दूसरों का भला करेंगे और उससे उसका अपना भाग्य भी चमक जायेगा। आपमें धार्मिक प्रवृत्ति होगी। बचपन में आपकी पिता की आर्थिक स्थिति बहुत बढ़िया नहीं हो सकती है।

आप पैसे के पीछे कभी नहीं भागेंगे, बल्कि पैसा स्वतः आपके पास आ जायेगा। आपका आशीर्वाद दूसरों के लिए बहुत शुभ हो सकता है। आपको दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिए और बहुत अधिक नहीं बोलना चाहिए।

आप आध्यात्मिक प्रवृत्ति वाले हो सकते हैं। आप साधु होते हुए भी काफी धनवान हो सकते हैं।

यदि आप अपने गले में माला पहनते हैं या गुरु, साधुओं एवं सन्यासियों का सम्मान नहीं करते हैं, पीपल या बदगद का पेड़ कटवाते हैं, तो यह बृहस्पति के फल को बुरी तरह से बर्बाद कर देगा।

बारहवें भाव में स्थित बृहस्पति के फल को शुभ करने के लिए आपको हल्दी या केसर का तिलक लगाना चाहिए। कोई भी कार्य करने से पहले अपना नाक अवश्य साफ रखें।

बारहवें भाव में स्थित बृहस्पति की वजह से आप बहुत ज्यादा आशावादी होंगे और आपके आस-पास के व्यक्तियों में आपके प्रति विश्वास होगा। आप दूसरों की सहायता करेंगे। 16 से 21 वर्ष के बीच में आपका अपमान भी हो सकता है, परन्तु यह अपमान भी दूसरों की भलाई करने की वजह से होगा।

यदि आप ब्राह्मणों, साधु सन्यासियों की सेवा करें तथा पीपल आदि के वृक्ष में पानी देते रहें, तो आपको भारी मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। आपको धार्मिक क्रिया-कलापों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। यदि आप साधना की ओर अग्रसित होते हैं, तो आपको जो भी कष्ट पहुंचायेगा, उसे दुख उठाना पड़ेगा।

आपकी कुण्डली में शनि बृहस्पति के साथ बैठा हुआ है या दूसरे भाव में बैठा हुआ है। आपको लोहे या लकड़ी से संबंधित कारोबार करने से सफलता मिल सकती है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप बुरे कार्य करेंगे, तो यह आपके लिए और आपके पुत्रों के लिए अशुभ होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शनि एक साथ बारहवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, विवाहोपरान्त आपका भाग्योदय होगा। आपका व्यवहार उत्तम होगा। यदि इस ग्रह युति का आपको अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो आपको धार्मिक स्थान में दूध का दान करना चाहिए।

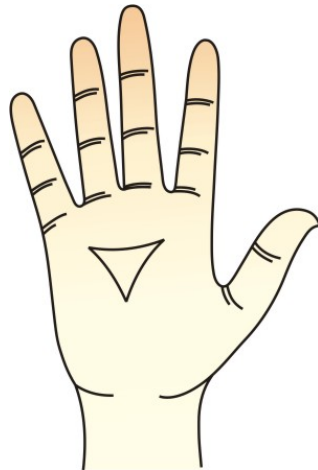


बारहवें भाव में स्थित बृहस्पति के उपाय और सावधानियाँ

1. पीपल के वृक्ष में पानी डालें।
2. वृद्ध ब्राह्मण की सेवा करें तथा उन्हें पीले वस्त्र दान करें।
3. केसर या हल्दी का तिलक लगायें।
4. गले में माला पहनें।
5. पिता की सेवा करें।
6. यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति और चंद्रमा एक साथ बैठे हुए हैं, तो बरगद के वृक्ष में पानी डालें।
7. सिर पर चोटी रखें।
8. अपना सिर हमेशा ढक कर रखें।
9. साधु-सन्यासियों की सेवा करें।
10. झूठी गवाही न दें।
11. रात को सोते समय अपने सिरहाने सौंफ और पानी रखें।
12. दूसरों को धोखा न दें।
13. अपने गुरु का सम्मान करें।
14. हरि पूजन करें।
15. पुखराज पहनें।
16. गरुण-पुराण का पाठ करवायें।



दूसरे भाव में स्थित सूर्य का फल



आपकी कुण्डली के दूसरे भाव में सूर्य स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप साहसी और उदार होंगे। आप अपने परिश्रम से आगे बढ़ेंगे।

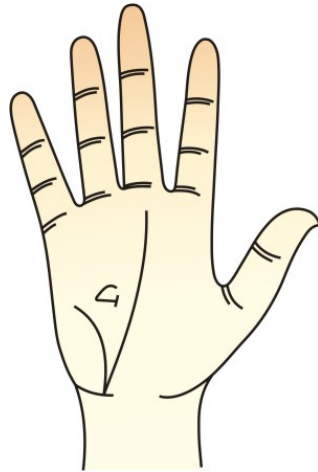
आपकी कुण्डली में आठवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, सूर्य से संबंधित वस्तुओं से आपको लाभ प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है। लाल किताब के अनुसार, सूर्य आपके लिए और द्वितीय भाव से संबंधित व्यक्तियों और वस्तुओं के लिए शुभ होगा।

दूसरे भाव में स्थित सूर्य के उपाय और सावधानियाँ

1. आपको गेंहूँ, जौ अथवा बाजरा किसी से दान में नहीं लेना चाहिए।
2. यदि आपको स्त्रियों से कष्ट है, तो शनि के उपाय जैसे, नारियल, बादाम और तेल धर्मस्थान में या मंदिर में देना चाहिए।
3. आपको अपने पुश्तैनी मकान में हैण्डपम्प लगाना चाहिए।
4. चंद्रमा की वस्तुएं जैसे चावल, चाँदी अथवा दूध का दान नहीं करना चाहिए।
5. आपको अपना चरित्र साफ-सुथरा रखना चाहिए।
6. आपको लोगों के लिए भलाई का काम करना चाहिए।
7. आपके लिए रविवार का व्रत रखना भी शुभ है।
8. हरिवंश पुराण की कथा सुनना भी आपके लिए लाभदायक होगा।
9. आपको सूर्य को गुड़ डालकर अर्घ्य देना चाहिए।
10. गेंहूँ, गुड़ अथवा लोहे के तवे का दान करना भी लाभदायक होगा।
11. आपको सरकारी कर्मचारियों को खुश करके रखना चाहिए।
12. आपको स्त्रियों से जमीन जायदाद की लड़ाई से बचना चाहिए।

नौवें भाव में स्थित चंद्रमा का फल



लाल किताब के अनुसार, नौवें भाव में स्थित चंद्रमा को जमीन जायदाद का कारक बताया गया है। आपको जमीन जायदाद का सुख प्राप्त होगा।

आप गणित विद्या में माहिर हो सकते हैं। आपको संतान का पूरा सुख प्राप्त होगा और तीर्थ यात्रा के बहुत सारे अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में चौथे भाव में कोई न कोई ग्रह बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको माता-पिता का सुख लंबी उम्र तक प्राप्त होगा। यदि आप धर्म-कर्म में विश्वास रखें, और दूसरों पर दया करें, तो आपकी आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ हो जायेगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी 24 से 27 वर्ष की आयु के बीच आपकी माता की आँखों पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है।

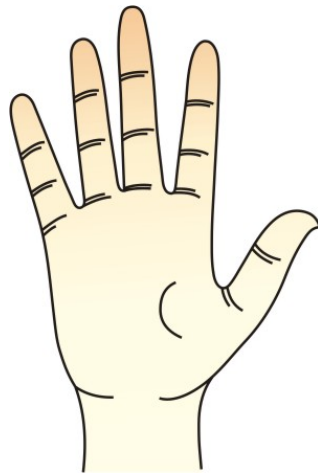
नौवें भाव में स्थित चंद्रमा के उपाय और सावधानियाँ

1. अपनी आलमारी में चाँदी का एक चौकोर टुकड़ा रखें।
2. गरीब मजदूरों को दूध पिलायें।
3. मछलियों को चावल खिलायें और साँप को दूध पिलायें।
4. तीर्थ यात्रा करें।
5. अपना चाल-चलन ठीक रखें।

6. चंद्रमा से संबंधित वस्तुएं जैसे- चाँदी, चावल, दूध आदि का कारोबार न करें।
7. जूठा भोजन न करें।
8. झूठ न बोलें।
9. सोमवार का व्रत रखें।
10. शिवजी की पूजा करें।
11. एक बर्तन में दूध भरकर अपने सिरहाने रखें और सुबह उसे कीकर के पेड़ की जड़ में डाल दें।
12. घर की छत पर पानी न डलवायें।



तीसरे भाव में स्थित शुक्र का फल



लाल किताब के अनुसार, तीसरे भाव में बैठा हुआ शुक्र शुभ फल देता है। यदि आप अपना चरित्र ठीक रखें और महिलाओं की इज्जत करें, तो शुक्र का फल और भी शुभ हो सकता है। आपकी पत्नी हमेशा आपका साथ देगी। आपके जीवनसाथी के होते हुए कोई भी आपका बुरा नहीं कर सकेगा। आप बहुत ही सुन्दर होंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी पत्नी नेक और ईमानदार, परन्तु क्रोधी होंगी। आप साहसी होते हुए भी उनसे दबकर रहेंगे। आपका अपना बनाया हुआ मकान नहीं हो सकता है और यदि बनायेंगे भी तो उसका असर शुभ नहीं हो सकता है। आप हर एक व्यक्ति के प्रिय होंगे।



तीसरे भाव में स्थित शुक्र के उपाय और सावधानियाँ

1. भाई की स्त्री की सेवा करें।
2. अपनी पत्नी का सम्मान करें और उन्हें नीचा न दिखायें।
3. अपना चरित्र ठीक रखें।
4. मंगल की वस्तुओं का प्रयोग करें।
5. घर में नृत्य और संगीत का आयोजन न करें।
6. अपने पुश्तैनी मकान को नष्ट न करें।
7. अतिथियों की सेवा करें।
8. अपने पहनावे पर ध्यान दें।



दसवें भाव में स्थित मंगल का फल



लाल किताब में दसवें भाव में स्थित मंगल के फल को बहुत शुभ बताया गया है। आप अपने खानदान को तारने वाले हो सकते हैं। यदि आपके जन्म से पहले आपके परिवार की हालत ठीक नहीं है, तो आपके जन्म के बाद परिवार की दशा सुधरने लगेगी।

आप अपनी मेहनत से बहुत धन इकट्ठा कर सकते हैं। यदि आपका बड़ा भाई है, तो आप कभी निःसंतान नहीं होंगे। आपकी आयु बहुत लंबी होगी और आपको गृहस्थी का सुख भी पूरा मिलेगा।

लाल किताब के अनुसार, आपको अपने घर का सोना नहीं बेचना चाहिए, अन्यथा इसका बहुत बुरा असर हो सकता है। आपको जादू और तंत्र आदि विद्याओं में भी गहरी रुचि हो सकती है।

यदि आप कुरूप, अपाहिज या निःसंतान व्यक्ति की सेवा करते हैं, तो मंगल का फल शुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव में कोई भी ग्रह नहीं बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस ग्रह युति के कारण मंगल का फल और भी शुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में मंगल दसवें भाव में अकेला बैठा हुआ है और उस पर उसके शत्रु ग्रहों की दृष्टि भी नहीं पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आपके रहन-सहन का स्तर राजाओं की तरह का होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल और केतु एक साथ दसवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, 28 से 45 वर्ष तक का समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं हो सकता है। उपाय के तौर पर आपको अपने मकान की नींव में दूध या शहद दबाना चाहिए।

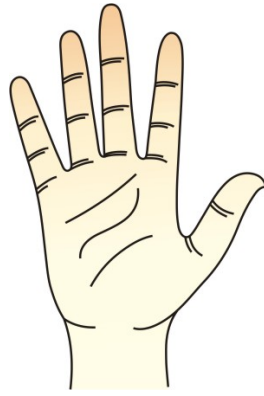


दसवें भाव में स्थित मंगल के उपाय और सावधानियाँ

1. हनुमान जी की पूजा करें।
2. मीठा भोजन करें।
3. हिरण पालें।
4. चाचा, ताया की सेवा करें।
5. पैतृक संपत्ति और सोना न बेचें।
6. दूध उबालते समय यह ध्यान रखें कि वह उबल कर बर्तन से बाहर न गिरे।
7. कुरूप, अपाहिज या निःसंतान व्यक्ति की सेवा करें।
8. महागायत्री का पाठ करें।
9. मंगलवार का व्रत रखें।
10. मृगछला पर सोर्यें।



दूसरे भाव में स्थित बुध का फल



दूसरे भाव में बैठा हुआ बुध शुक्र को कमजोर कर देता है। लाल किताब में दूसरे भाव में स्थित बुध को बहुत बड़ा संत और ज्यादातर अपनी भलाई करने वाला बताया गया है। कहीं-कहीं पर दूसरे भाव में स्थित बुध को ब्रह्मज्ञानी भी बताया गया है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति नौवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, समाज में आपकी इज्जत होगी और आपकी माता के लिए भी यह एक शुभ स्थिति है।

आपकी कुण्डली में छठा अथवा आठवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आप बुद्धिमान होंगे और मानसिक रूप से स्वस्थ होंगे।

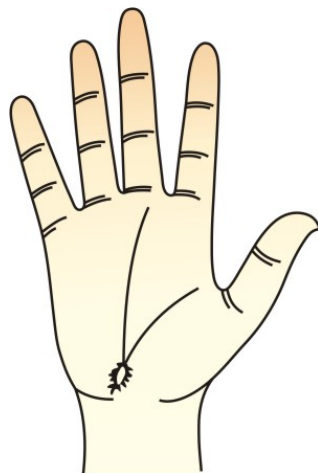


दूसरे भाव में स्थित बुध के उपाय और सावधानियाँ

1. नाक छेद करवा के 96 दिन तक उसमें चाँदी पहनें।
2. कुआंरी साली अथवा कुआंरी कन्याओं की सेवा करने से लाभ प्राप्त होगा।
3. चंद्रमा और बृहस्पति का उपाय सहायता करेगा।
4. यदि आपके घर में बिना खोला हुआ सूत या ऊन का गोला पड़ा हुआ है, तो उसे खोल दें।
5. फिटकरी से दाँत साफ करना भी लाभदायक होगा।
6. आपको तोता, भेड़ तथा बकरी नहीं पालनी चाहिए।
7. किसी धर्म-स्थान में दूध और चावल का दान देना भी लाभकारी होगा।
8. हरे रंग का प्रयोग कम से कम करें।



बारहवें भाव में स्थित शनि का फल



लाल किताब के अनुसार, बारहवें भाव में बैठा हुआ शनि आमदनी और सुख के

लिए शुभ प्रभाव डालता है। यदि आपके सिर के बाल जल्दी झड़ जायें, तो आप धनवान और सुख से परिपूर्ण हो सकते हैं। आपको अपना बनता हुआ मकान बीच में नहीं रोकना चाहिए, इससे आपके और मकान बन सकते हैं।

आप व्यापार में बहुत सफल हो सकते हैं। आप पैसे के पीछे कभी नहीं भागेंगे।

लाल किताब के अनुसार, आपका परिवार बहुत बड़ा हो सकता है। आप हमेशा कोई बड़ा कार्य करने के चक्कर में रह सकते हैं। आप अनेक लोगों का नेतृत्व भी कर सकते हैं।

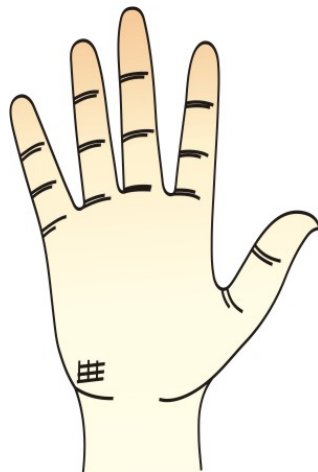


बारहवें भाव में स्थित शनि के उपाय और सावधानियाँ

1. अपना चाल-चलन ठीक रखें।
2. माँस-मदिरा का सेवन न करें।
3. झूठ न बोलें।
4. अपने मकान के दक्षिणी कोने पर काले कपड़े में 12 बादाम स्थापित करें।
5. 12 शनिवार मछलियों को बादाम खिलायें।
6. अपने मकान में एक अंधेरी कोठरी अवश्य रखें।
7. जूठा भोजन न करें।
8. शनिवार का व्रत रखें।
9. तेल और शराब का दान करें।



चौथे भाव में स्थित राहु का फल



आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली (टेवा) धर्मी टेवा कहलायेगी। आपके घर में बहुत ज्यादा खर्च होगा, परन्तु ये सारा खर्च केवल शुभ कार्यों पर होगा। आप अपने परिवार का काफी ख्याल रखेंगे और बड़ी मात्रा में धन अर्जित करेंगे।

चौथे भाव में राहु सामान्यतः शुभ फल देता है, परन्तु यदि आप जमीन के नीचे पानी जमा होने वाली टंकी, घर के अन्दर भट्ठी, कोयला की बोरियों का अम्बार लगाना या आप अपनी छत बदलवाते हैं, तो राहु का शुभ फल नहीं रह जाता है।

चौथे भाव में राहु से पिता और पुत्र पर शुभ असर होता है, परन्तु माता पर राहु का असर शुभ नहीं रहता है।

48 वर्ष के बाद बृहस्पति का फल शुभ हो जायेगा।

आपका ननिहाल पक्ष भले ही ठीक हालत में हों, परन्तु आपकी उम्र के 24वें

वर्ष के बाद स्थितियां शुभ नहीं रह सकती हैं।

आपकी 12, 24 या 48 वर्ष की आयु में या पुत्र की उत्पत्ति के बाद आपके माता-पिता की स्थिति में सुधार होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में है। लाल किताब के अनुसार, विवाह के उपरान्त आपके ससुराल में धन ठीक मात्रा में आने लगेगा, जिससे आपको फायदा होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य अथवा मंगल दूसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, राहु को इन दोनों से मदद मिलेगी।

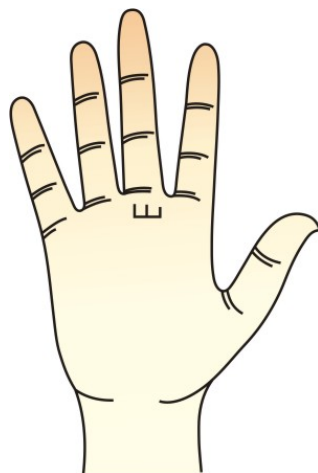


चौथे भाव में स्थित राहु के उपाय और सावधानियाँ

1. 400 ग्राम या एक किलो धनियां बहते पानी में सात बुधवार तक बहायें।
2. हरिद्वार में गंगा स्नान करें।
3. कैसा भी गंदा पानी आपके घर के चाहरदीवारी के अन्दर नहीं जमा होना चाहिए।
4. सीढ़ियों के नीचे रसोई घर नहीं होना चाहिए।
5. एक साथ पूरा घर बनवायें।
6. घर की छत पर कोयला इत्यादि ईंधन न रखें।
7. सरस्वती जी की पूजा अर्चना करें।
8. गोमेद धारण करें।
9. तम्बाकु का सेवन न करें।
10. घर में या आंगन में धुआं न करें।
11. झूठी गवाही न दें।



दसवें भाव में स्थित केतु का फल



लाल किताब के अनुसार, आपको अपने भाई का हर तरह से ख्याल रखना चाहिए। यदि वो कोई गलती भी करता है, तो उसे क्षमा कर देना चाहिए। इससे केतु का फल शुभ हो जायेगा और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

यदि आप अपना चाल-चलन ठीक नहीं रखेंगे, तो आप बर्बाद हो सकते हैं।

यदि आपकी संतान पर केतु का अशुभ प्रभाव पड़ रहा है, तो घड़े की शक्ल के चाँदी के बर्तन में शहद भरकर रखने से औलाद पर शुभ प्रभाव होगा। यदि फिर भी केतु का अशुभ प्रभाव कम नहीं होता है, तो उस बर्तन को किसी सुनसान जगह पर मिट्टी के अन्दर दबायें। 48 वर्ष की उम्र के बाद घर में कुत्ता पालना भी केतु के अशुभ असर को दूर कर सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि शुभ स्थिति में उपस्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप मिट्टी को सोना बना सकते हैं और आपकी संतान भी योग्य होगी।

आपकी कुण्डली में केतु और मंगल एक साथ दसवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इससे इन दोनों ग्रहों का फल अशुभ हो जाता है। आपके चरित्र में कमी आ सकती है तथा पारिवारिक सुख एवं नौकरी/कारोबार में परेशानियां हो सकती हैं। यदि आप अपने घर की नींव में चाँदी और शहद दबाते हैं, तो केतु का अशुभ प्रभाव दूर हो सकता है।



दसवें भाव में स्थित केतु के उपाय और सावधानियाँ

1. मकान की नींव में शहद और दूध दबायें।
2. चाँदी के बर्तन में शहद भरकर घर में रखें।
3. अपना चाल-चलन ठीक रखें।
4. 48 वर्ष की आयु के बाद अपने घर में कुत्ता पालें।
5. गणेश जी की पूजा करें।
6. 9 वर्ष से छोटे लड़कों को भोजन करायें।
7. काले और सफेद तिल को नाले में प्रवाहित करें।



जीवन से संबंधित योग और उपाय



शिक्षा से संबंधित भविष्यफल और उपाय

यदि आप परीक्षा में लाल रंग का पेन जिसका कैप सुनहरा हो, जिसमें किसी भी रंग की स्याही भरी हो, उसका इस्तेमाल करेंगे, तो परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण होंगे।

जेहि पर कृपा करहि जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहि बानी।
मोरि सुधारिहि सो सब भांती। जासु कृपा नहि कृपा अघाती।

इस चौपाई का 108 बार प्रतिदिन प्रातः काल जप करें।

ॐ माँनिसाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतोः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुना देकमवधीः काममोहितम्।

इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातःकाल जागते ही बिना किसी से बोले तीन बार जप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

जनक सुता जग जननी जानकी।
अजिसय प्रिय करुनानिधान की।
ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपा निर्मल मति पावउँ।

श्री जानकी अथवा श्री सीता राम जी के चित्रपट का पूजन करके इस मंत्र का 108 बार प्रतिदिन जाप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्यादेहु मोहिं हरहु कलेस विकार॥

श्री हनुमान जी की पूजा करके उपयुक्त दोहे का एक माला (108 बार) प्रतिदिन जाप करें। इससे बुद्धि एवं स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी।

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।
अल्प काल विद्या सब आई॥

इस चौपाई का प्रतिदिन एक माला (108 बार) जाप करके विद्यालय जाने से निश्चय ही परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

लाल किताब के अनुसार, जो बच्चे पढ़ने में कमजोर हैं, उन्हें हरे रंग की तुरमली चाँदी की अंगुठी या नेकलेस में पहनने से लाभ हो सकता है।

बृहस्पतिवार को पीले कपड़े में 7 हल्दी की गांठें और बेसन के लड्डू बांधकर नदी में प्रवाहित करने से परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

'ॐ नमः शिवाय' का जाप करके लाल धागे में दो पाँच मुखी रुद्राक्ष के बीच में एक छेद मुखी रुद्राक्ष को शिवलिंग से स्पर्श कराके धारण करें।

'ॐ गंग गणपतेः नमः' नामक मंत्र को ग्यारह बार परीक्षा आरम्भ होने से पूर्व जाप करें, परिणाम आपके पक्ष में होगा।

परीक्षा देने जाते समय किसी धार्मिक स्थान में आधा लीटर दूध दान करना उपयोगी साबित हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी संतान पढ़ने में कतरा रहा हो, या स्कूल ना जाने के लिए बहाने बनाती हो, या हठ करती हो, तो तांबे का एक चौकोर टुकड़ा सफेद धागे में बांधकर उसके गले में पहनायें।

‘श्री कृष्ण प्रसंग’ नामक मंत्र को पूष्य नक्षत्र या किसी शुभ दिन को लाल कलम से 17 बार सफेद पन्ने पर लिखकर परीक्षा के दौरान अपने जेब में रखें।



स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में शनि बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप मांस-मदिरा का सेवन अत्यधिक मात्रा में करते हैं, तो आपको आंखों से संबंधित रोग हो सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा नौवें भाव में और शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी माता की आंखों की रोशनी पर इस ग्रह युति का बुरा असर पड़ सकता है।

यदि आपके घर में कोई ना कोई हमेशा रोग ग्रस्त रह रहा है, बीमारी जाने का नाम नहीं ले रहा है, तो आपके घर में जितनी रोटी बनती है, उसमें चार मीठी रोटी जोड़कर महीने में एक बार अमावस्या या संक्रांति के दिन काले कौए, काली गाय या कुत्ते को खिलाना चाहिए, अथवा महीने में एक बार अन्दर से खोखले कद्दू को किसी धार्मिक स्थल पर दान करना चाहिए, अथवा रात को रोगी के सिरहाने एक, दो या पाँच रूपये का सिक्का रखकर प्रातः काल सफाई कर्मचारी को दान करें, अथवा यदि आप श्मशान से गुजर रहे हैं, तो एक या दो रूपये के सिक्के वहां जरूर फेंके।



धन, ब्यापार और रोजगार से संबंधित योग और उपाय

आपकी कुण्डली में बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके लिए गैस इत्यादि से संबंधित कारोबार लाभदायक होगा।

आपकी कुण्डली में, शनि बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके लिए व्यापार करना अधिक फायदेमंद होगा।

आपकी कुण्डली में, राहु चौथे भाव में एवं मंगल, सूर्य या बृहस्पति दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, 24 वर्ष की उम्र के पश्चात आपकी गरीबी दूर हो जायेगी।

आपकी कुण्डली में, शनि दूसरे, पाँचवें, नौवें, या बारहवें भाव में बृहस्पति के साथ बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको शनि से संबंधित वस्तुओं के कारोबार से बचना चाहिए, अन्यथा आपको घाटा हो सकता है। शनि से संबंधित रिश्तेदार आपके धन की हानि का कारण बन सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, सूर्य दूसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार,

खाद्य पदार्थों के व्यापार से आपको आमदनी होगी।

आपकी कुण्डली में, मंगल दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप सेना, पुलिस इत्यादि में हैं या प्रापर्टी डीलिंग का कार्य करते हैं, तो आपको सफलता प्राप्त होगी।

आपकी कुण्डली में, बुध दूसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप रंग, पेन्ट या जनरल स्टोर से संबंधित कार्य में लगे हुए हैं, तो आप लाभ की स्थिति में रहेंगे।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप पीतल के बर्तन से संबंधित व्यापार या गैस एजेन्सी, पेट्रोल पम्प आदि से संबंधित कार्यों में लगे हुए हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप स्त्रियों के सौन्दर्य प्रसाधन से संबंधित वस्तुओं का व्यापार करते हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होगा।



मकान से संबंधित महत्वपूर्ण योग, सावधानियाँ और उपाय

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण की तरफ है और मकान से बाहर निकलते समय सीधे हाथ पर रसोई और सामने स्नानघर या पानी का स्थान हो तो आपको कोई ना कोई कष्ट हो सकता है। धन हानि की भी संभावना है।

यदि आपके मकान पर किसी पेड़ की छाया पड़ रही है, तो यह मंगल के शुभ प्रभाव को नष्ट कर देता है।

यदि आपके मकान की दीवार के पास कटा और सूखा पीपल का पेड़ है, तो आपके परिवार और धन संपत्ति पर इसका बुरा असर पड़ेगा। मंगल का प्रभाव अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपने कमाई से मकान बनवाते हैं, तो यह आपके लिए नुकसानदायक होगा। पैतृक संपत्ति और धन नष्ट हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपनी मकान की पिछली दीवार को तोड़कर रोशनी करें, तो शनि का बहुत ही अशुभ असर होगा। उपाय के तौर पर मकान के मुख्य दरवाजे पर काले कपड़े में साबुत मूंग बांधकर रखें।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने मकान की मरम्मत बहुत सोच-समझकर करवाना चाहिए। भूल से भी मकान की छत ना बदलें, शौचालय के दरवाजा या शीट बदलवाने से भी धन हानि हो सकती है।

यदि आपका मकान बंद गली के अन्तिम सिरे पर स्थित है, और उसमें हवा सीधे आती है, तो आपके संतान पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है। ऐसे मकान में कभी ना रहें।

यदि आपके मकान पर किसी धार्मिक स्थल आदि की छाया पड़ रही है, तो

घर में बीमारियां परेशान करती रहेंगी।

रसोई घर में खाना बनाने का चुल्हा और बर्तन धोने का स्थान एक ही प्लेटफार्म पर नहीं होना चाहिए, अन्यथा घर में कलह होती रहेगी। उपाय के तौर पर इन दोनों स्थानों के मध्य पंचमुखी हनुमान का चित्र लगायें।

घर के अन्दर यदि लोहे की चारपाई हो, तो पूर्व-दक्षिण दिशा में बिछायें।

घर के मालिक को दक्षिण-पश्चिम के कोने में सोना चाहिए।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार, स्त्रियों के लिए हानिकारक होगा। ऐसे मकान में केवल विधुर पुरुष ही सुखपूर्वक रह सकते हैं। यदि आप मुख्य द्वार पर तांबे की कील गाड़े, तो स्थिति सुखद हो सकती है। चाँदी की चौड़ी पत्ती दरवाजा के एक कोने से दूसरे कोने तक बिछा सकते हैं। घर पर मिट्टी का बंदर रखें, जिसका मुंह दक्षिण दिशा की ओर हो। बकरी का दान करें। दिन के दो बजे के बाद साबूत मूंग की दाल किसी धार्मिक स्थल पर दान करें।

यदि आपके मकान में कोई मिट्टी वाला स्थान नहीं है, तो यह परिवार की स्त्रियों के लिए हानिकारक हो सकता है और धन सम्पत्ति पर भी बुरा असर हो सकता है। निम्न उपाय करने से स्थिति सुखद हो सकती है। मिट्टी की बनी हुई औरत की मूर्ति घर में रखें। सफेद रूमाल में कपूर की टिकिया, देशी घी और रूई बांधकर रखें। घर में छोटे-मोटे कार्य करने के लिए नौकरानी रखें।

यदि आपके मकान में धन रखने के लिए तिजोरी, आला या तहखाना बना हुआ है, तो उसे बिल्कुल खाली ना रखें। बादाम अथवा छुआरे रख सकते हैं।

यदि आपके मकान में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान ना खोलें।

यदि आपको अपने घर की छत बदलनी है, तो पहले एक अस्थाई छत पुरानी छत के ऊपर बनायें।

लाल किताब के अनुसार, घर के मुख्य द्वार से बाहर निकलते समय सीधे हाथ की तरफ पानी का स्थान और उलटे हाथ की तरफ या पीठ की तरफ रसोई होना उत्तम होता है।

यदि आपके मकान पर पीपल इत्यादि की छाया पड़ रही है, तो यह आपके तरक्की के लिए नुकसानदायक हैं। आपको उस पीपल की जड़ में जल चढ़ाना चाहिए।

यदि आपके मकान के आस-पास कुआं है, तो उसमें भूलकर भी कुड़ा-करकट ना डालें। प्रतिदिन उसमें दूध डालने से आपकी उन्नति होगी।

घर के अन्दर किकर का पेड़ ना लगायें।

मकान या प्लाट का मुख्य द्वार उत्तर-पूर्व या पूर्व दिशा में होना चाहिए।

आपकी चंद्र राशि- मिथुन, तुला या कुम्भ है। लाल किताब के अनुसार, आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में होना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, सफेद रंग या पेन्ट का प्रयोग मकान में सभी जगह किया जा सकता है। नीले रंग या पेन्ट का प्रयोग शयन कक्ष या कार्नेस हाल

में करें।

हरे या क्रीम रंग का प्रयोग अध्ययन कक्ष में करें।

गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग भोजनालय में करें। पुलिस या मिलिट्री के स्थान पर लाल रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर है, तो उसमें सफेद रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो उसमें लाल, गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में है, तो उसमें हरे या पीले रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में है, तो उसमें नीले या हल्के रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण-पूर्व दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण-पश्चिम दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर-पश्चिम दिशा में है, तो आपको अपने मकान में सफेद रंग का प्रयोग करना चाहिए।

आपको अपने मकान का मुख्य द्वार मकान के कम चौड़ाई वाले हिस्से में रखना चाहिए। यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दो पल्लों का है, तो यह आपको अधिक लाभकारी होगा। यदि मुख्य द्वार अन्दर की तरफ खुलता है, तो यह अधिक लाभकारी होगा।

आपको अपने मकान के उत्तर और पूर्व दिशा में दक्षिण और पश्चिम दिशा से अधिक खुला स्थान रखना चाहिए।

आपको अपने मकान की दक्षिण और पश्चिम की दीवार ज्यादा मोटी और ज्यादा ऊँची रखनी चाहिए।

मकान की छत की ढलान उत्तर, पूर्व या उत्तर-पूर्व में होनी चाहिए।

अपने घर के प्रत्येक कमरे का उत्तर-पूर्व वाला कोना खाली रखें।

मकान में बरामदा और खुली छत उत्तर और पूर्व में होनी चाहिए।

मकान में बालकनी उत्तर और पूर्व में होना चाहिए। बेसमेन्ट उत्तर-पूर्वी भाग में होनी चाहिए।

यदि मकान में पत्थर की मूर्ति लगा रहे हैं, तो उसे दक्षिण-पश्चिम दिशा में लगायें।

मकान के दक्षिण-पश्चिम वाले हिस्से में सम संख्या में वृक्ष लगायें।

मकान में तुलसी जी का पौधा पूर्व, उत्तर या उत्तर-पूर्व में लगायें।

मकान में खिड़कियों की संख्या उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक होनी चाहिए। दरवाजे और खिड़कियों की संख्या सम होनी चाहिए, परन्तु संख्या का अन्त 10, 20 इत्यादि से नहीं होना चाहिए।

मकान में सीढ़ियां दक्षिण, पश्चिम या ईशान कोण को छोड़कर कहीं भी बनाई जा सकती हैं। सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए। सीढ़ियों का घुमाव दक्षिणावर्ती होना चाहिए।

यदि आप अपने मकान में पानी का हौज बनवा रहे हैं, तो उसे उत्तर-पूर्व में बनवायें, यह काफी लाभदायक होगा।

यदि आप छत पर पानी की टंकी रखवा रहे हैं, तो उसे उत्तर-पश्चिम दिशा में रखवायें। टंकी का रंग काला अथवा नीला हो तो बढ़िया रहेगा।

मकान में पूजा का स्थान ईशान, पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। भगवान की मूर्ति का मुख उत्तर या पूर्व की ओर रखें। पूजा घर का आकार पिरामिड जैसा रखें। पूजा घर के फर्श का रंग सफेद या हल्का पीला होना चाहिए। पूजा घर के दीवारों का रंग क्रीम, सफेद या हल्का नीला रखें।

मकान में रसोई घर दक्षिण-पूर्व दिशा में होना चाहिए। खाना बनाते समय अपना मुख पूर्व की ओर रखें। रसोई घर की खिड़कियां पूर्व और दक्षिण दिशा में होनी चाहिए।

मकान में भोजनकक्ष पश्चिम दिशा में रखें। खाने की मेज आयताकार या वर्गाकार होनी चाहिए।

मकान में स्नानागार पूर्व, उत्तर या उत्तर-पश्चिम भाग में रखें।

मकान का शौचालय दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपका मकान बिना झंझट के बनेगा।



विवाह, स्त्री और गृहस्थ-सुख से संबंधित योग और उपाय

आपकी कुण्डली में, सूर्य शुभ भावों में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी स्त्री सुन्दर, सुघड़ और शिक्षित होगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठे, नौवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके प्रेम संबंधों की संख्या एक से अधिक होगी और आप स्त्रियों में काफी लोकप्रिय होंगे।

आपकी कुण्डली में शनि बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, किसी स्त्री के कारण आपका धन नष्ट हो सकता है। शीघ्र विवाह हेतु-मंगल-पार्वती स्त्रोत का पाठ प्रतिदिन करें।

शीघ्र विवाह हेतु- स्नान के पश्चात कांसे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर मुहुर्त देखकर छाया पात्र निकालें।

शीघ्र विवाह हेतु- पीले वस्त्र में चने की दाल बांधकर बृहस्पतिवार के दिन किसी मंदिर में दान करें।

यदि विवाह में अत्यधिक विलम्ब हो रहा है, तो वाल्मिकी रामायण के बाल-काण्ड के सर्ग 73 का 43 दिन तक लगातार पाठ करें।

शीघ्र विवाह हेतु दुर्गा सप्तशती के श्लोकों का पाठ 43 दिन तक लगातार करें।

शीघ्र विवाह हेतु सात सोमवार शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।



संतान सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको पुत्र संतान की प्राप्ति में बाधाएँ आ सकती हैं।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति दसवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता को गंभीर बीमारी का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा और शुक्र आमने-सामने स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में संतान की प्राप्ति में कठिनाई आ सकती है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और सूर्य कायम है। लाल किताब के अनुसार, आपको संतान प्राप्ति में कोई भी बाधा नहीं आ सकती है, और संतान भी समय पर होगी।

यदि आप बंद गली के मकान में रहते हैं तो आपको संतान संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है और नर संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। उपाय के तौर पर आपको बृहस्पतिवार से लगातार 43 दिन तक प्रतिदिन केसर का तिलक लगाना चाहिए।

यदि आप संतान संबंधी समस्या से ग्रस्त हैं, तो आपको अपने घर में हरिवंश पुराण या महाभारत का पाठ करना चाहिए।

यदि आप कुत्ते के नर संतान को अपने घर में रखते हैं, तो आपको संतान अवश्य होगी।

संतान की प्राप्ति के लिए गणेश जी की पूजा करना लाभदायक होता है।

यदि आपको संतान संबंधी कोई समस्या है, तो काले कुत्ते की सेवा करना या उसे अपने घर पर रखकर खाना खिलाना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

यदि किसी स्त्री को संतान हो, परन्तु जीवित ना रहे, तो लाल किताब में ऐसी स्थिति से बचाव के लिए बहुत ही साधारण और सफल उपाय बताया गया है- स्त्री के गर्भवती होने पर उसके बाजु पर लाल धागा बांध दें और संतान होने के पश्चात उस धागे को नवजात शिशु के बाजु पर बांध दें और स्त्री को नया लाल धागा पुनः बांधें। स्त्री के बाजु पर 18 महीने तक बंधा रहना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी स्त्री का बार-बार गर्भपात होता है, तो काला धागा उसकी कमर में बांधें और संतान के जन्म के बाद यह धागा संतान के बाजू पर बांधें।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की संतान जीवित नहीं रहती है, तो संतान के जन्मदिन पर मिठाई की जगह नमकीन खाद्य पदार्थ वितरण करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, प्रसव के समय स्त्री को शारीरिक कष्ट से बचाने और नवजात शिशु के स्वास्थ्य के लिए प्रसव पीड़ा के समय दो पीतल के बर्तन लेकर एक में मीठी वस्तु और दूसरे में दूध भर के स्त्री के हाथ से स्पर्श करवाकर रखना चाहिए, और शिशु के जन्म के बाद से किसी धार्मिक स्थान में दान करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की नर संतान जीवित न रहती हो, तो उन्हें किसी धार्मिक स्थान में शिशु को जन्म देना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि संतान को कष्ट हो, तो गाय, कौए अथवा कुत्तों को अपने भोजन का एक हिस्सा दें।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपके घर में एक छत को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

लाल किताब के अनुसार, आपके घर में कुएं को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।



विदेश यात्रा और भ्रमण से संबंधित योग और उपाय

आपकी कुण्डली में, शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप जमीनी यात्रायें अधिक करेंगे।



लाल-किताब के उपाय करने के नियम और सावधानियाँ

- (1) एक दिन में केवल एक ही उपाय करें। एक उपाय समाप्त हो जाने के बाद अगले दिन से दूसरा उपाय शुरू करें।
- (2) सभी उपाय सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले करें। जो उपाय सूर्यास्त के बाद करने के लिए लिखा गया है, केवल उसे ही सूर्यास्त के बाद करें।
- (3) सबसे पहले छोटे उपाय, जो एक दिन के होते हैं, उन्हें करना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कोई ऋण है तो पहले ऋण वाले उपाय करें।
- (4) कुछ उपाय सप्ताह, मास या 43 दिन लगातार करने होते हैं, इन उपायों को बाद में शुरू करें। ध्यान रखें कि ऐसे उपाय बीच में न टूटें, अन्यथा शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे।
- (5) यदि लंबे उपाय करते समय किसी कारण से उपाय बीच में बंद करना पड़े तो उस दिन उपाय करने के बाद थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें और जब दुबारा उपाय शुरू करना हो तो वह चावल धर्म स्थान में दे दें या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। उसके बाद उपाय शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल प्राप्त होगा।
- (6) मासिक धर्म के दौरान महिलायें मंदिर जाने वाले उपाय न करें, इस दौरान अपने खून से संबंधित परिवार के किसी सदस्य से उपाय करवायें।
- (7) एक दिन वाले उपाय चौथ, नवमी एवं चतुर्दशी को कर सकते हैं, लेकिन लंबे चलने वाले उपाय इन तिथियों को शुरू न करें।
- (8) जल प्रवाह की कोई भी वस्तु सिर पर सात बार घुमाकर जल प्रवाह करें।
- (9) यदि कोई उपाय जिंदगी भर के लिए करना है तो पहले उसे शुरू कर साथ--साथ एक--एक करके दूसरे उपाय करें।
- (10) जिस उपाय को किसी खास दिन शुरू करने के लिए न कहा गया हो, उस उपाय को करने के लिए किसी दिन या तिथि जैसे अमावस्या, पूर्णिया आदि का विचार न करें।
- (11) जिस चीज/औजार से उपाय करें या जो भी सामान उपाय के लिए ले जायें, उसे वहीं छोड़ दें। लंबे चलने वाले उपाय में औजार आखिरी दिन छोड़ें।
- (12) जो चीज जल प्रवाह करें या धर्म स्थान में दें, उस दिन उस चीज का सेवन न करें।
- (13) उपाय के दिनों में शारीरिक संबंध स्थापित न करें।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, www.lalkitabnadi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.

Prepared by lalkitabnadi.com on 19 June 2024, 06:10:04PM

Please visit us at <https://www.lalkitabnadi.com> Email: lalkitabnadi@gmail.com

Phone: +91 98181 93410